Postal Regn No./C.G/RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 157 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, मंगलवार 10 दिसम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अपने आंसू पोंछना धर्म नहीं है, दूसरे के आंसू पोंछना ही धर्म है।

Religion means consoling and sataiting others, not of own self.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

सभी के लिए आवास : मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल की 7 आवासीय परियोजनाओं का किया शुभारम्भ

अटल विहार योजना से जरूरतमंदों को किफायती दर पर आवास होगा उपलब्ध : विष्णुदेव साय

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा बनाए जाएंगे 1650 आवास, ई.डब्ल्यू.एस. भवनों में 80,000 रुपए एवं एल.आई.जी. भवनों में 40,000 रुपए की सब्सिडी राज्य शासन द्वारा मिलेगी

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने 'सभी के लिए आवास' की परिकल्पना को साकार करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में 'अटल विहार योजना' के अंतर्गत छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल की 7 आवासीय परियोजनाओं का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने इस अवसर पर कहा कि हमारी सरकार के एक वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। इस अवसर पर राज्य सरकार द्वारा अटल विहार योजना प्रारंभ की जा रही है ताकि जरूरतमंदों को विशेष रूप से शहरी क्षेत्र के लोगों को किफायती दर पर मकान उपलब्ध कराए जा सकें।

मुख्यमंत्री श्री साय ने जिन आवासीय परियोजनाओं का शुभारंभ किया उनके तहत 07 विभिन्न स्थानों पर भूरकोनी-रायपुर, पथर्रा- राजिम, खरतुली-धमतरी, सिहाद-धमतरी, पुलगांव-दुर्ग, गुरूर- बालोद, एवं कोकड़ापारा-बीजापुर में ईडब्ल्यूएस, एलआईजी और एमआईजी श्रेणी के आवास बनाए जाएंगे। लगभग 300 करोड रुपए की लागत की इन परियोजनाओं के तहत 1650 मकान बनाए जाएंगे, इनमें ई.डब्ल्यू.एस. और एल.आई.जी. श्रेणी के 1452 आवास तथा एम.आई.जी. श्रेणी के 200 आवास बनाए जाएंगे। हितग्राही भवनों का ऑनलाईन पंजीयन वेबसाईट (www.cghb.gov.in) के माध्यम से घर बैठे कर सकेंगे।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा हर शहरी गरीब परिवारों को आवास मिले, इस उद्देश्य से प्रधानमंत्री आवास योजना लागू की गई है। इससे प्रेरणा लेते हुए हमारी राज्य सरकार ने छत्तीसगढ़ के विभिन्न शहरों एवं विकासखंड में रह रहे आवासहीन अथवा कच्चे भवन के स्थान पर किफायती एवं पक्के छत युक्त आवास उपलब्ध कराने के लिए 'अटल विहार योजना' प्रारंभ की है, जिसके तहत हाउसिंग बोर्ड द्वारा 50,000 भवनों का निर्माण कर आबंटन का लक्ष्य निर्धारित किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अटल विहार योजना के लिए हाउसिंग बोर्ड को एक रूपये प्रति वर्ग फुट पर शासकीय भूमि उपलब्ध कराई जा रही है इस संबंध में प्रदेश के सभी जिला कलेक्टर्स को निर्देश दिये गये है। इस योजना में पूर्व में घोषित अनुदान को जारी रखते हुए ईडब्ल्यूएस भवनों में 80,000 रुपए एवं एलआईजी भवनों में 40,000 रुपए अनुदान राज्य शासन द्वारा दिया जा रहा है।

वित्त तथा आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने इस अवसर पर कहा कि अटल विहार योजना के तहत आवासों का निर्माण गुणवत्ता के साथ किया जाएगा। इस योजना के तहत राजधानी रायपुर के साथ-साथ दूरस्थ बीजापुर जिले में भी मकान बनाए जाएंगे। जल्द ही यह योजना सभी जिलों में शुरू होगी।

हाउसिंग बोर्ड द्वारा नियमित भवनों को फ्री-होल्ड करने की योजना वर्ष 2012 में प्रारंभ की गई। इस योजना में राज्य के लोगों की मांग को प्राथमिकता देते हुए हमारी सरकार द्वारा अभी हाल ही में 26 नवम्बर 2024 को आयोजित कैबिनेट की बैठक में फ्री-होल्ड किये जा रहे भवनों में डायवर्सन शुल्क एवं पेनाल्टी में शत प्रतिशत छूट प्रदान की गई है, इससे हाउसिंग बोर्ड के लगभग 80 हजार हितग्राहियों को राहत मिलेगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के सचिव श्री पी. दयानंद, आवास एवं पर्यावरण विभाग के सचिव श्री अंकित आनंद, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के सचिव श्री बसव राजू एस., आयुक्त छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल श्री कुंदन कुमार सहित छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री साय ने अमर शहीद वीर नारायण सिंह को उनके बलिदान दिवस पर किया नमन

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अमर शहीद वीरनारायण सिंह को 10 दिसम्बर को उनके बलिदान दिवस पर नमन किया है। उन्होंने शहीद वीर नारायण सिंह के मातृभूमि के प्रति योगदान को याद करते हुए कहा है कि स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर देने वाले आदिवासी जन-नायक वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ महतारी के सच्चे सपूत थे। वे सोनाखान के ज़मींदार परिवार से थे लेकिन उन्होंने आदिवासियों, किसानों और गरीबों के लिए लड़ाई लड़ी। उन्होंने सन् 1856 के भीषण अकाल के दौरान गरीबों को भूख से बचाने के लिए अनाज गोदाम से अनाज निकालकर गरीबों में बांट दिए। उन्होंने सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के दौरान छत्तीसगढ़ की जनता में देश भक्ति का संचार किया। शहीद वीर नारायण सिंह के संघर्ष, मातृभूमि के प्रति समर्पण और बलिदान को हमेशा याद किया जाएगा। गरीबों और किसानों के रक्षक के रूप में उनकी गौरवगाथा सदैव अमर रहेगी।

पीएम नरेन्द्र मोदी ने एलआईसी की बीमा सखी योजना को किया लॉन्च, महिला सशक्तिकरण में होगा अहम योगदान

पानीपत (आरएनएस)। पीएम मोदी आज हरियाणा के पानीपत दौरे पर हैं। यहां उन्होंने एलआईसी की 'बीमा सखी योजना' की शुरुआत की। इस मौके पर पीएम मोदी ने कहा कि हरियाणा में डबल इंजन की सरकार दोगुनी रफ्तार से काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आज महिला सशक्तिकरण की दिशा में भारत एक और मजबूत कदम उठा रहा है। आज का दिन और भी वजहों से विशेष है। आज 9 तारीख है, शास्त्रों में 9 अंक को बहुत शुभ माना जाता है। 9 अंक नवदुर्गा की नव शक्तियों से जुड़ा है। 9 दिसंबर के दिन ही संविधान सभा की पहली बैठक हुई थी। आज जब देश संविधान के 75 वर्ष का महोत्सव मना रहा है, 9 दिसंबर की ये तारीख हमें समानता और विकास को सर्वस्पर्शी बनाने की प्रेरणा देती है।

पीएम मोदी ने कहा कि अभी यहां (पानीपत) देश की बहनों-बेटियों को रोजगार देने वाली बीमा सखी योजना का शुभारंभ किया गया है। मैं देश की सभी बहनों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। कुछ वर्ष पहले मुझे, पानीपत से बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान शुरू करने का सौभाग्य मिला था। इसका सकारात्मक प्रभाव हरियाणा के साथ-साथ पूरे देश में हुआ। अब 10 वर्ष बाद, इसी पानीपत की धरती से बहनों-बेटियों के लिए बीमा सखी योजना का प्रारंभ हुआ है। हमारा पानीपत नारीशक्ति की प्रतीक भूमि बन गया है। नारी को सशक्त करने के लिए बहुत आवश्यक है कि उन्हें आगे बढ़ने के खूब अवसर मिलें, उनके सामने से हर बाधा हटे। जब नारी को आगे बढ़ने का अवसर मिलता है, तो वो देश के सामने अवसरों के नए द्वार खोल देती हैं। लंबे समय तक हमारे देश में ऐसे अनेक काम थे जो महिलाओं के लिए वर्जित थे।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 'मुख्यमंत्री अन्न कोष योजना' का किया शुभारंभ

विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा समुदाय की गर्भवती एवं शिशुवती माताओं को मिलेगा अतिरिक्त पोषण आहार

मुख्यमंत्री ने 536 करोड़ रूपए के कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज अंबिकापुर के पीजी कॉलेज ग्रांउड में आयोजित कार्यक्रम में 536 करोड़ 14 लाख की लागत वाले 1614 विकास एवं निर्माण कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया और कहा कि इससे सरगुजा जिले के विकास में तेजी आएगी। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर अंबिकापुर नगर निगम क्षेत्र अधोसंरचना विकास के लिए 23.90 करोड़ रूपए दिए जाने की घोषणा की। उन्होंने सुपर स्पेशियल्टी हॉस्पिटल अंबिकापुर को डीकेएस रायपुर की तर्ज पर विकसित करने तथा विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग कॉलेज का नाम शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज किए जाने की भी घोषणा की।

मुख्यमंत्री श्री साय इस अवसर पर सरगुजा जिले में विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा समुदाय की गर्भवती एवं शिशुवती माताओं को अतिरिक्त पोषण आहार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री अन्न कोष योजना का शुभारंभ किया। जिला प्रशासन सरगुजा द्वारा यह योजना पायलट प्रोजेक्ट की शुरू की गई है। इससे पहाड़ी कोरवा समुदाय में मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर को कम करने में मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने जिला प्रशासन द्वारा तैयार की गई कैरियर निर्देशिका का भी विमोचन किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर मां महामाया को नमन करते हुए जिलेवासियों को विकास कार्यों की बधाई देते हुए कहा कि अंबिकापुर छत्तीसगढ़ ही नहीं देश के सबसे सुंदर और साफ सुथरे शहरों में शामिल है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, मंगलवार 10 दिसम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

राजेन्द्र जग्गी पुन: क्षेत्रीय रेल्वे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति (जेडआरयूसीसी) में सदस्य मनोनीत

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि रेल्वे प्रशासन और उपयोगकर्ताओं के बीच रेल्वे द्वारा उपलब्ध कराई गई सेवाओं से संबंधित परारमर्श के अवसर उपलब्ध करवाने के लिये भारतीय रेल्वे में परामर्शदात्री समितियों का गठन किया गया है। दक्षिण पूर्व मध्य रेल्वे बिलासपुर के क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामशदात्री समिति (जेडआरयूसीसी) में प्रिंसिपल चेम्बर ऑफ कामर्स और व्यापार संगठन कोटि के अंतर्गत छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज के आग्रह पर कार्यकारी अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जग्गी को पुन: दो वर्ष की अवधि के लिये सदस्य के रूप में रेल मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित किया गया है। उनका कार्यकाल 01 अक्टूबर 2024 से 30 सितम्बर 2026 तक रहेगा। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल सहित समस्त चेम्बर पदाधिकारियों ने श्री राजेन्द्र जग्गी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी एवं रेल मंत्रालय का आभार व्यक्त किया।

आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय पहुंचे भेलवा तालाब नेहरू नगर निरीक्षण करने

भिलाई (विश्व परिवार)। नगर निगम भिलाई क्षेत्र में निर्मित नेहरू नगर भेलवा तालाब का निरीक्षण करने के लिए आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय सुबह-सुबह पहुंच गए। वहां के लोगों से मिले वहां की व्यवस्था को देखें, देखकर के उन्होंने कहा यह बहुत ही खूबसूरत तालाब है। इसको अच्छे से मेंटेन करके और खूबसूरत बनाया जा सकता है। वहां पर सुबह-सुबह टहलने वाले लोगों से बात किया उन्हीं के साथ जाकर के हर एक क्षेत्र का निरीक्षण किया। रोज सुबह टहलने वाले वाले इंडस्ट्रियलिस्ट सुभाष गुलाटी ने कहा कहा अभी सफाई तो रोज हो रही है झाड़ू लग रहा है। लेकिन मेंटेनेंस, लाइट, तालाब के किनारे की दिवाली गिर गई है उसे बनाने की जरूरत है। शैलेंद्र सिंह परिहार ने बैठने के लिए कुर्सी लगवाने की बात की, डॉ ललित पोपट ने कहा एक हाई मास्क लाइट लगा दिया जाए जिससे प्रकाश हो जाएगा असामाजिक तत्व नहीं आ पाएंगे। आयुक्त ने सभी के सुझाव को ध्यान से सुनकर के जोन कमिश्नर अजय सिंह राजपूत को प्रस्ताव बनाने को कहा। शीघ्र अति शीघ्र प्रस्ताव बनवाने को कहा। तालाब के बीच में फवारा लगाने का भी सुझाव आया जिससे पानी रीसायकल होते रहे। उद्यान को खुलने और बंद करने का टाइम टेबल सेट करने के लिए, निर्धारित समय पर तालाब खुले और निर्धारित समय पर बंद हो। सबके सहयोग से हम इस तालाब को और सुंदर बनाएंगे इसको देखकर के मुझे खुशी हुई क्या अच्छी हरियाली है गुरुद्वारा है, मंदिर है, बढ़िया सरोवर है, बस देख अच्छे से देखभाल की जरूरत है। इस अवसर पर डॉ वी के गोयल, नरेश खोसला, डॉक्टर नवीन कौरा, बसंत चौबे, तुलसी भमवानी, संजय भाटिया, प्रदीप डालमिया, सुबोध अग्रवाल, नरेश गुप्ता, जितेंद्र सिंह ने अपने सुझाव दिए। सभी की बातों को सुनकर के आयुक्त ने यथासंभव निराकरण करने को कहा। यह भी बात उठी की शाम को पुलिस की पेट्रोलिंग हो जिससे सामाजिक तत्व पर नियंत्रण हो। कुछ लोग जानबूझकर नगर निगम के लाइट को तोड़ देते हैं। नगर निगम भिलाई के तरफ से स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, जोन स्वास्थ्य अधिकारी अंकित सक्सेना, जनसंपर्क अधिकारी अजय शुक्ला, उद्यान अधिकारी तिलेश्वर साहू, प्रभारी स्वच्छता निरीक्षक कमलेश द्विवेदी आदि उपस्थित रहे।

साय सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में चला प्लास्टिक मुक्त भिलाई बनाने का जागरूकता अभियान

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। राज्य शासन से प्राप्त दिशा.निर्देश अनुसार सरकार गठन के 1 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 09 दिसम्बर से 20 दिसम्बर तक सभी नगरीय निकायों में अलग.अलग गतिविधियां कराए जाने के निर्देश प्राप्त हुए है। जिसके तहत आज नगर पालिक निगम भिलाई में सिंगलयूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की रैली निकाली गई। रैली सुबह 10.30 बजे पावर हाउस लाल मैदान से होकर सर्कुलर मार्केट होते हुए जलेबी चैंक पर समापन किया गया। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि, पाषर्दगढ़, व्यपारीगण, चेंबर के सदस्य आदि उपस्थित रहे। सभी लोगों ने प्लास्टिक मुक्त भिलाई बनाने हेतु अभियान छेड़ने का आवाहन किया। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने सभी अधिकारियो को निर्देशित किए है कि भिलाई शहर को साफ.सुथरा बनाये रखने के लिए सभी वार्डोए गली मोहल्लो में सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाये। साथ ही सिंगलयूज प्लास्टिक पर भी प्रतिबंध लगाए। प्लास्टिक पर्यावरण के साथ साथ स्वास्थ्य के लिए भी बहुत हानिकारक होता है। आज प्लास्टिक मुक्त अभियान ही पहला थीम था जिसके लिए रैली निकालकर लोगो को जागरूक किया गया। समझाइए दिए जाने के बाद भी जो व्यापारी सिंगल युज प्लास्टिक में समान बेचेंगे, उनके ऊपर चालानी कार्रवाई की जाएगी। जागरूकता रैली में डोर.टू.डोर कचरा एकत्रित करने वाले सफाई कर्मचारियो ने अपनी बुलंद आवाज में स्वच्छता ही सेवा की मार्केट क्षेत्र में गुंज लगाए। रैली का समापन जलेबी चैंक पर राष्ट्र पिता महात्मागांधी जी के मुर्ति पर माल्यापर्ण किया गया। अंत में आयुक्त ने सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई। अभियान के तहत वार्ड क्रमांक 36 के पूरा पार्षद विनोद चेलक वार्ड क्रमांक 30 के पार्षद राजकुमार जायसवाल जोन आयुक्त येशा लहरे, स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, वरिष्ठ स्वच्छता निरीक्षक के.के.सिंह, जोन स्वास्थ्य अधिकारी अंकित सक्सेना, अनिल मिश्रा, हेमंत माझी, वीरेंद्र बंजारे, जोन स्वच्छता निरीक्षक अंजनी सिंह, अतुल यादव, जी सी एम यादव, मिशन मैनेजर अमन पटले, अभिनव, पाटनी, सहित जोन के अधिकारी कर्मचारी अधिक संख्या में उपस्थित रहे।

केंद्रीय राज्यमंत्री तोखन साहू ने बिलासपुर हवाई अड्डे के रनवे उन्नयन और रात्रि लैंडिंग सुविधाओं को लेकर केंद्रीय उड्डयन से की मुलाकात

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री श्री तोखन साहू ने आज नई दिल्ली में बिलासपुर हवाई अड्डे के बहुप्रतीक्षित विस्तार पर चर्चा करने के लिए केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री राम मोहन नायडू से मुलाकात की। बैठक का मुख्य फोकस हवाई अड्डे के रनवे को वर्तमान 3सी श्रेणी से 4सी श्रेणी में विस्तारित करना और रात्रि लैंडिंग सुविधाओं की स्थापना करना था, ताकि क्षेत्र के लिए हवाई संपर्क में उल्लेखनीय सुधार हो सके।

श्री साहू ने बिलासपुर हवाई अड्डे के उन्नयन के लिए नागरिक उड्डयन मंत्री को लिखे पत्र में किए गए अपने पहले के अनुरोध को दोहराया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस विकास से इस क्षेत्र की लगभग आधी आबादी को हवाई यात्रा सेवाओं तक पहुंच प्राप्त होगी और इस क्षेत्र में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। श्री साहू ने कहा कि 3सी से 4सी श्रेणी के हवाई अड्डे में उन्नयन से इसकी परिचालन क्षमता में वृद्धि होगी और रात्रि लैंडिंग सुविधाओं की शुरूआत से हवाई अड्डे की क्षमता में और वृद्धि होगी, जिससे यात्रियों के लिए अधिक सुविधाजनक उड़ान विकल्प सुनिश्चित होंगे और छत्तीसगढ़ के लोगों को बेहतर समग्र सेवा मिलेगी। जवाब में नागरिक उड्डयन मंत्री ने श्री साहू को बिलासपुर हवाई अड्डे के प्रस्तावित विस्तार के लिए अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने क्षेत्र के लिए इस विकास के महत्व को स्वीकार किया और पुष्टि की कि आवश्यक धनराशि आवंटित करने और उन्नयन प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

साय सरकार के एक साल पूर्ण होने पर प्रस्तावित कार्यक्रम का प्रभारी मंत्री कश्यप ने लिया जायजा

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय सरकार के एक साल पूर्ण होने पर साइंस कॉलेज में आयोजित प्रस्तावित कार्यक्रम का प्रभारी मंत्री एवं वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने आज जायजा लिया। इस अवसर पर खेल मंत्री श्री टंकराम वर्मा, पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री राजेश मूणत उपस्थित थे। मंत्री श्री कश्यप ने कार्यक्रम की तैयारियों के लिए आवश्यक निर्देश दिए। साथ ही कार्यक्रम स्थल की साफ-सफाई रखने, शौचालय की व्यवस्था के निर्देश दिए। मंत्री श्री कश्यप ने प्रवेश द्वार और निकासी द्वार में फ्लैक्स लगाने के निर्देश दिए, ताकि अलग-अलग वर्ग के लोगों को कार्यक्रम स्थल में पहुंचने में दिक्कतें न हो। कार्यक्रम स्थल पर कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह, एसएसपी संतोष सिंह, नगर निगम आयुक्त अबिनाश मिश्रा, जिला पंचायत सीईओ विश्वदीप, जनसंपर्क अपर संचालक जे.एल. दरियो, अपर संचालक उमेश मिश्रा भी उपस्थित थे।

एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल रायपुर में फर्टिलिटी-प्रिजर्विंग सर्जरी से महिला को मिल रहा नया जीवन

रायपुर (विश्व परिवार)। एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल रायपुर मेंप्रजनन योग्य आयु की महिला मरीजअत्यधिक मासिक रक्तस्राव और एनीमिया (खून की कमी) की समस्या लेकर इलाज के लिए आईं। प्री-ऑपरेटिव जांच के दौरान यह पाया गया कि उन्हें फाइब्रॉइड्स (गठान) की समस्या थी, जो आमतौर पर गैर-कैंसरजन होते हैं और गर्भाशय में विभिन्न आकारों में होते हैं। इसके लक्षण महिलाओं में भारी मासिक धर्म, पेट में दर्द और कभी-कभी बांझपन का कारण बन सकती है।

डॉ. मनीषा शर्मा, कंसल्टेंट गायनेकोलॉजिस्ट, एम एम आई नारायणा हॉस्पिटल रायपुर ने बताया कि यह मामला काफी जटिल था और ऑपरेशन से पहले विशेष सावधानी की आवश्यकता थी, क्योंकि सर्जरी के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव का खतरा था।

सर्जरी के दौरान यह पता चला कि महिला के गर्भाशय में कुल 17 फाइब्रॉइड्स, जो विभिन्न आकारों में थे। इन फाइब्रॉइड्स को हटाया गया और गर्भाशय को संरक्षित रखते हुए महिला की प्रजनन क्षमता को बनाए रखा गया। यह सर्जरी फर्टिलिटी प्रिजर्विंग सर्जरी कहलाती है, जिसका उद्देश्य महिला के भविष्य में गर्भधारण की क्षमता को सुरक्षित रखना है।

डॉ. मनीषा शर्मा ने बताया कि इस सर्जरी की सफलता में एनेस्थीसिया विशेषज्ञ डॉ. राकेश चंद और उनकी टीम की अहम भूमिका रही। ऑपरेशन के बाद की देखभाल में क्रिटिकल केयर स्पेशलिस्ट डॉ. प्रदीप शर्मा और उनकी टीम ने पूरी तरह से सावधानी बरती, जिससे सर्जरी पूरी तरह सफल रही।

हॉस्पिटल के फ़ेसीलिटी डायरेक्टर श्री अजित बेलामकोंडा ने कहा कि यह सर्जरी हमारे अस्पताल की चिकित्सा विशेषज्ञता और मरीजों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। एम एम आईनारायणाहॉस्पिटलनिरंतर उन्नत चिकित्सा सुविधाओं के साथ मरीजों की देखभाल में सर्वोत्तम मानक स्थापित करने की कोशिश करता है। महिला ने अस्पताल और उसकी टीम का धन्यवाद करते हुए कहा कि मैं बेहद आभारी हूं कि मुझे नया जीवन मिला और मेरी प्रजनन क्षमता को सुरक्षित रखा गया। इस सर्जरी ने मेरी पूरी जिंदगी को बदल दिया है, और अब मुझे भविष्य के बारे में कोई चिंता नहीं है।

सरकार गठन के एक वर्ष पूर्ण होने पर विभागों द्वारा विविध कार्यक्रमों का आयोजन

नगरीय निकायों में निकाली गई स्वच्छता रैली

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। सरकार गठन के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विभागों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन 9 से 20 दिसम्बर के मध्य किया जाएगा। इसी कड़ी में कलेक्टर श्री दीपक सोनी के मार्गदर्शन में सोमवार को जिले के सभी नगरीय निकायों में स्वच्छता सायकिल रैली निकाली गई जिसमें नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के अधिकारी -कर्मचारी एवं स्वच्छता दीदी शामिल हुए। आगामी दिनों में नगरीय प्रशासन विभाग द्वारा सफाई वाहनो से जिंगल का प्रसारण, सफाई पखवाड़ा का आयोजन, स्वच्छता दीदियों का सम्मलेन, सभी नगरीय क्षेत्रों में आकर्षक सेल्फी जोन तैयार किया जाएगा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा एक साल की उपलब्धयों पर क्विज का आयोजन, मेहंदी, रंगोली प्रतियोगिता, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा सायकल रैली, सुशासन पर स्लोगन, वाद विवाद, नुककड़ नाटक, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा अमृत सरोवरो पर एक पेड़ माँ के. नाम अभियान अंतर्गत वृक्षारोपण, ग्राम पंचायतों में स्वच्छता पखवाड़ा, बिहान की दीदियों द्वारा सुशासन का संकल्प, सुशासन रंगोली, सुशासन चौपाल, स्वस्थ्य विभाग द्वारा ब्लड डोनेशन कैम्प, मितानिन सम्मेलन, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, सहकारिता विभाग द्वारा धान खरीदी केंद्रों में किसान सम्मान कार्यक्रम, आदिवासी विकास विभाग द्वारा छात्रावासों में खेलकूद, क्विज जनजातीय वीरों पर आधारित कार्यक्रम, महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा महतारी वंदन के लाभार्थियों का सम्मान, आंगनबाड़ी में कुर्सी दौड़, कृषि विभाग द्वारा कृषक उन्नति योजना से लाभान्वित किसानों का सम्मान, उन्नत किसानों का सम्मान, कृषक संगोष्ठी, समाज कल्याण विभाग द्वारा दिव्यांग कलाकारों, खिलाड़ियों का सम्मान, पुलिस विभाग द्वारा शहीदों के परिजनों के सम्मान आदि का आयोजन किया जाएगा।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चराईडांड इकाई द्वारा आयोजित 7 दिवसीय शिविर सम्पन्न

जशपुर/कुनकुरी (विश्व परिवार)। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चराईडांड इकाई द्वारा आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर सम्पन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि ग्राम पंचायत वासुदेवपुर की सरपंच मीना नाग थीं। उनका लक्ष्य गीत के साथ नृत्य कर स्वागत किया गया।

सरपंच मीना नाग का लक्ष्य गीत के साथ नृत्य कर किया स्वागत प्राचार्य के. टोप्पो ने सहयोगियों का जताया आभार

सरपंच मीना नाग ने चरित्र निर्माण उदारता उसे समाज को समझाने पर जोर दिया। कार्यक्रम के संरक्षक प्राचार्य के टोप्पो शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चराईडांड ने बताया स्वयंसेवकों ने शिविर में बढ़ चढ़कर कार्य किया। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार।

राष्ट्रीय योजना के स्वयंसेवक तनु सिंह तनवीर अंसारी सूर्यकांत प्रहलाद दास एवं बालेश्वर यादव ने शिविर के अनुभवों को साझा किया।

इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में नीरज तेंदुआ उपसरपंच फुलवंती बाई बिहानू राम दीवान माध्यमिक शाला के प्रधान पाठक एवं प्राथमिक शाला के प्रधान पाठक विद्याधर सिंह तथा संस्था के व्याख्याता विनोद कुमार वैद्य, मनोज कुमार गुप्ता, सुरुचि पैकरा, सुनीता केरकेट्टा, वंदना पैंकरा, दिगंबर श्रीवास, अजीत, एकता, गौरव टोप्पो, खेमनारायण सिंह उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री आवास योजना के पात्र हितग्राहियों की लॉटरी निकाल कर मकान आवंटन

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री आवास योजना मोर मकान-मोर आस एवं मोर मकान-मोर चिन्हारी घटक अंतर्गत 154 आवासो का नगर निगम भिलाई के मुख्य कार्यालय परिसर में खुली लाटरी पद्वति से आवासो को आबंटित किया गया। आबंटन के दौरान वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन, महापौर नीरज पाल एवं निगम आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय स्वयं उपस्थित रहे।

निगम क्षेत्र में सूर्या विहार के 49 मकान, एनार स्टेट के 75 मकान, कृष्णा इंजिनियरिंग के 22 मकान, मॉडल के 7 मकान एवं रजत बिल्डर्स के 1 मकानों का आबंटन किया गया। मोर आस के 139 मकानो में से 4 भूतल एवं 135 सामान्य वर्ग को दिया गया। इसी प्रकार मोर चिन्हारी के 15 मकानो में से 1 भूतल एवं 14 सामान्य वर्ग को दिया गया। आवास आबंटन में 1 विकलांग एवं 4 वरिष्ठ हितग्राही को ग्राउंड फ्लोर का आवास आबंटन किया गया। कुल 154 मकानों में जो हितग्राही आज की लाटरी में अनुपस्थित थे, उनके स्थान पर अन्य हितग्राही जो पहले से मकान के लिए आवेदन किये थे। लाटरी समिति के निर्णय एवं सक्षम अधिकारी की स्वीकृति पश्चात अनुपस्थित हितग्राही के आवासो को को अन्य उपस्थित आवेदको से लॉटरी निकलवा कर आवास आबंटन किया गया।

विधायक रिकेश सेन ने सभी हितग्राहियो को बताया कि शासन का प्रयास है मकान सबको मिले, जितना मकान बन रहा है, उसी में से पारदर्शिता के साथ लाटरी हितग्राहियो की उपस्थिति में निकाली जाती है। पुरी प्रक्रिया का फोटोग्राफी एवं लगातार वीडियोग्राफी की जाती है। जिसमे नियमानुसार 10 प्रतिशत अंशदान की राशि जमा करने वाले हितग्राही भागीदार बनते है। आबंटन के दौरान एमआईसी सदस्य चंद्रशेखर गवयी, आवास योजना के नोडल अधिकारी डी.के.वर्मा, कार्यपालन अभियंता विनिता वर्मा, अभियंता दीपक देवांगन, प्रभारी अधिकारी विद्याधर देवांगन आदि उपस्थित रहे।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16411/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 09-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16411
वार्ड का नाम -02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 02 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR802F00444 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती PAABHA BAJPAI W/O LT. SHAMBHU PRASHAD BAJPAL , MOHIT BAJPAI S/O LT. SHAMBHU PRASHAD BAJPAL पिता/पति श्री/श्रीमती PAABHA BAJPAI W/O LT. SHAMBHU PRASHAD BAJPAL , MOHIT BAJPAI S/O LT. SHAMBHU PRASHAD BAJPAL के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती MAHIMA MITTAL पिता/पति श्री/श्रीमती ALOK KUMAR MITTAL ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16341/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 06-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16341
वार्ड का नाम-69- माधवराव सप्रे वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR568A0032A जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती RAJENDRA SINGH पिता/पति श्री/श्रीमती KISHAN SINGH के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SMT. SHAIL KUMARI TARAK पिता/पति श्री/श्रीमती LT. HARINARAYAN TARAK ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16322/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 06-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16322
वार्ड का नाम-69- माधवराव सप्रे वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR568C1385 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती NETRAM VERMA पिता/पति श्री/श्रीमती RAM SEVAK VERMA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1- MAMTA VERMA 2- YOGESH KUMAR VERMA पिता/पति श्री/श्रीमती 1- YOGESH KUMAR VERMA 2- BHARAT RAM VERMA ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16335/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 09-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16335
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR227I00071 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SMT. LAXMI JOSHI पिता/पति श्री/श्रीमती W/O PREM PRAKASH JOSHI के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती पूजा दत्ता पिता/पति श्री/श्रीमती पिता श्री विरेन्द्र दत्ता ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16252/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 06-12-2024
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16252
वार्ड का नाम-12- महात्मा गांधी वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR225G00207 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MR. SANDEEP KUMAR MITTAL S/O MR. GOPIRAM MITTAL, MRS. KANTA MITTAL W/O MR. GOPIRAM MITTAL पिता/पति श्री/श्रीमती MR. SANDEEP KUMAR MITTAL S/O MR. GOPIRAM MITTAL, MRS. KANTA W/O MR. GOPIRAM MITTAL के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती चन्दन कुमार शुक्ला पिता/पति श्री/श्रीमती देवनारायण शुक्ला ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर मंगलवार 10 दिसंबर 2024

कृषक उन्नति योजना से किसानों को मिली समृद्धि और लाभ

कृषक उन्नति योजना, समर्थन मूल्य पर धान खरीदी और परिवार की सामूहिक प्रयास से कृषि में मिल रही सफलता

कृषक उन्नति योजना से मिली राशि से फसल उत्पादन में बढ़ोत्तरी का मिला प्रोत्साहनः- किसान रामायण सिंह

3100 रुपए में धान खरीदी होने से किसानों के कठिन परिश्रम को मिल रहा सही मोलः ओमप्रकाश

कोरबा(विश्व परिवार)। प्रदेश में खेती-किसानी को बढ़ावा देने, फसल उत्पादन को प्रोत्साहित करने और किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय द्वारा शुरू की गई कृषक उन्नति योजना, किसानों के जीवन में खुशहाली ला रही है। इस योजना से मिलने वाली सहायता के माध्यम से किसान अपने जीवन को नई दिशा दे रहे हैं और उनकी आर्थिक उन्नति के रास्ते खुल रहे हैं।साथ ही छत्तीसगढ़ शासन द्वारा खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में 3100 रुपए समर्थन मूल्य पर 21 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से धान खरीदी कर किसानों के श्रम को सम्मान दिया जा रहा है। पाली विकासखण्ड के चैतमा धान खरीदी केंद्र में अपने 100 क्विन्टल धान बेचने आएग्राम केराकछार के किसान श्री रामायण सिंह ने बताया कि अपनी उपज को 3100 रुपए प्रति क्विंटल के समर्थन मूल्य पर बेचने से उन्हें बहुत राहत मिली है। वे अपनी मेहनत का सही मूल्य पा रहे हैं, जिससे उन्हें बेहतर आर्थिक स्थिति का सामना करने में मदद मिल रही है। इससे उनका उत्साह बढ़ा है। रामायण सिंह के साथ आए उनके बेटे ओम प्रकाश ने छत्तीसगढ़ शासन द्वारा किसानों के कल्याण के लिए किए गए प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि इस पहल से किसानों के जीवन में बड़े बदलाव आ रहे है। ओम प्रकाश ने कहा कि समर्थन मूल्य पर धान खरीदी होने से किसानों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलता है और वे अपनी मेहनत के सही मूल्य को प्राप्त कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ सरकार की इस योजना से अब किसानों को केवल अनाज ही नहीं, बल्कि उनके कठिन परिश्रम का सही पुरस्कार भी मिल रहा है। रामायण सिंह ने बताया कि उनके परिवार में कुल 4 सदस्य हैं, जिसमें उनकी पत्नी श्रीमती वृंदा, उनका बेटा ओमप्रकाश और बहू शामिल हैं। वे सभी मिलकर अपने करीब 10 एकड़ कृषि भूमि पर मेहनत करते हैं और फसल उगाते हैं। रामायण सिंह का परिवार कृषि को अपनी जीवनशैली मानता है, और इसके लिए सभी सदस्य एकजुट होकर काम करते हैं। परिवार की सामूहिक मेहनत और समर्पण से उनकी फसल उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है। वे सभी कृषि कार्य में मेहनत और लगन से काम करते हैं, जिससे उनकी भूमि से अधिक से अधिक लाभ मिल रहा है। इस पारिवारिक एकजुटता के कारण ही वे कृषि में सफलता प्राप्त कर पा रहे हैं और अपनी आय में वृद्धि कर रहे हैं। किसान रामायण सिंह ने बताया कि पिछले सीजन में उन्होंने समिति में 168 क्विंटल धान बेचा था और कृषक उन्नति योजना के तहत उन्हें आदान राशि के रूप में 1.50 लाख से अधिक राशि खाते में प्राप्त हुई थी। इस राशि से उन्हें इस खरीफ सीजन में फसल उत्पादन बढ़ाने में सहायता मिली है। उन्होंने कहा कि इस योजना के माध्यम से किसानों को आर्थिक सहायता मिलती है।

संक्षिप्त समाचार

जिला प्रशासन की त्वरित कार्यवाही से अनुकंपा नियुक्ति हेतु आवेदको को मिला नियुक्ति आदेश

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर श्री एस जयवर्धन एवं अपर कलेक्टर श्रीमती नयनतारा सिंह तोमर द्वारा आवेदक सेजल विश्वकर्मा, दीपा सिंह, संध्या सिंह, श्रीमती सुचिता सिंह, श्री प्रकाश कुमार तिवारी, कलावती पैकरा, श्री प्रज्जवल साहू, श्री पुष्पराज सिंह, श्री सुशील कुमार पैकरा, श्री जतीन कुमार पासवान, श्रीमती सोनी देवी सोनी को जिले के विभिन्न विभागों में पदस्थापना करते हुए अनुकम्पा नियुक्ति आदेश पत्र प्रदाय किया गया। गौरतलब है कि शासकीय कर्मचारी के आकस्मिक निधन हो जाने के कारण मृत्यु उपरांत उनके आश्रित पुत्र, पुत्री, पत्नी द्वारा अनुकंपा नियुक्ति हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया था। जिला प्रशासन की ओर से कलेक्टर द्वारा आवेदन प्राप्ति पर त्वरित कार्यवाही करते हुये अनुकंपा नियुक्ति की कार्यवाही शीघ्र पूर्ण की गई। जो जिला प्रशासन के संवेदनशील कार्यशैली का परिचायक है।

14 को होगी आखिरी लोक अदालत न्यायालय रहेगी चहल-पहल

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली के दिशानिर्देशन एवं माननीय छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, बिलासपुर के मार्गदर्शन में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, सूरजपुर श्री गोविद नारायण जांगडे के द्वारा 14 दिसम्बर, दिन शनिवार को जिला न्यायालय सूरजपुर, कुटूम्ब न्यायालय सूरजपुर, तालुका न्यायालय प्रतापपुर एवं जिले के समस्त राजस्व न्यायालयों में नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जायेगा। नेशनल लोक अदालत में वर्चुअल एवं फिजिकल दोनों ही माध्यम से प्रकरणों की सुनवाई की जायेगी। नेशनल लोक अदालत में न्यायालय में लंबित राजीनामा योग्य आपराधिक एवं सिविल मामले, मोटर दुर्घटना दावा मामले, परिवारिक मामले, राजस्व मामले व अन्य राजीनामा योग्य मामले तथा बैंक ऋण, विद्युत, जल के बकाया देयकों का प्रीलिटिगेशन मामलों को नेशनल लोक अदालत में रखे जायेगें। मामलों की सुनवाई हेतु जिला न्यायालय सूरजपुर, तालुका न्यायालय प्रतापपुर, कुटुम्ब न्यायालय सूरजपुर में सुनवाई हेतु खंडपीठ का गठन किया जायेगा। यहीं राजस्व विभागों के मामलों की सुनवाई राजस्व न्यायालयों में की जायेगी जिसमें न्यायालय कलेक्टर, सभी अनुविभागीय न्यायालय एवं समस्त तहसील न्यायालय शामिल है जहां सुनवाई हेतु खंडपीठ का गठन किया जायेगा। लोक अदालत एक ऐसा मंथ है, जहां न्यायालयों में लंबित वाद-विवाद /मुकदमें या प्री-लिटिगेशन चरण के मामलों का आपसी समझौते के आधार पर निपटारा किया जाता है। लोक अदालत विवादों के निपटारे का वैकल्पिक माध्यम है, जहां श्रम व धन की बचत के साथ त्वरित न्याय प्राप्त होता है। लोक अदालत में लोगों के मध्य आपसी मतभेद हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। नेशनल लोक अदालत में वर्चअल मोड पर उपस्थित होने के लिए जिला न्यायालय सूरजपुर की वेबसाईट https://surajpur.dcourts.gov.in पर जाकर संबंधित कोर्ट (खण्डपीठ) के आगे दिये लिंक पर क्लीक कर वर्चुअल मोड पर जुड़ा जा सकता है। बैंक ऋण: बकाया बिजली बिल, जल के बकाया देयकों के प्री लिटिगेशन प्रकरणों में पक्षकारों को नियमानुसार छूट दिया जायेगा। जिले वासियों से अपील है कि 14 दिसंबर के नेशनल लोक अदालत में अधिक से अधिक लोग उपस्थित होकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं

सरगुजा सांसद ने केंद्रीय विद्यालय की स्वीकृति पर प्रधानमंत्री एवं शिक्षामंत्री को दिया धन्यवाद

सूरजपुर - सूरजपुर जिले में केंद्रीय विद्यालय खोलने की स्वीकृति देने पर सरगुजा सांसद चिंतामणि महाराज ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं शिक्षामंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान को पत्र लिखकर धन्यवाद ज्ञापित किया है। उन्होंने कहा कि इस निर्णय से जिले में शिक्षा का स्तर उन्नत होगा। उन्होंने कहा कि केंद्रीय विद्यालय खोलने से विद्यार्थियों को शिक्षा के नए अवसर मिलेंगे और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी।

मैगजीनभांटा नाले में कलवर्ट और एप्रोच मार्ग के निर्माण की कैबिनेट मंत्री ने की भूमिपूजन

कोरबा(विश्व परिवार)। नगर विधायक और वाणिज्य, उद्योग व श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन ने वार्ड क्रमांक 23 पंडित रविशंकर शुक्ल नगर मैगजीनभांटा स्थित कच्चे नाला पर कलवर्ट और एप्रोच मार्ग के निर्माण का भूमिपूजन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए कैबिनेट मंत्री श्री देवांगन ने कुल 25 लाख की लागत से होने वाले उपरोक्त कार्यों का भूमिपूजन किया। इस अवसर पर श्री देवांगन ने कहा कि पंडित रविशंकर शुक्ल नगर वॉर्ड से खरमोरा और दादरखुर्द वॉर्ड के रहवासियों की आवाजाही में पिछले कई वर्षों से परेशानी बनी हुई थी। विधानसभा चुनाव में जब क्षेत्र की जनता ने इन परेशानियों से अवगत कराया था, तब मैंने वादा किया था। आज इस वादे को निभाते हुए कार्यों का श्री गणेश किया जा रहा है। कलवर्ट और एप्रोच रोड बनने के बाद लोगों को आवागमन में किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि इस क्षेत्र के लोगों को किसी भी तरह से मूलभूत सुविधाओं से वंचित नहीं होना पड़ेगा। हमारी कोशिश है कि सभी कार्यों को प्राथमिकता के साथ जल्द प्रारम्भ कराकर पूर्ण भी कराएं।

लेक्टर विलास भोसकर ने बैठक में की धान खरीदी की प्रगति की समीक्षा

अम्बिकापुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर विलास भोसकर ने रविवार को जिला कलेक्टरेट सभाकक्ष में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 अंतर्गत समर्थन मूल्य में जारी धान खरीदी की प्रगति के सम्बन्ध में समीक्षा बैठक ली। बैठक में अपर कलेक्टर सुनील नायक, जिले के राजस्व विभाग, खाद्य विभाग, सहकारिता विभाग, सहकारी बैंक प्रबंधक तथा समिति प्रबंधक उपस्थित रहे। बैठक में कलेक्टर भोसकर ने खरीदी केंद्रों में आवश्यक व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के सम्बन्ध में जानकारी लेते हुए कहा कि केन्द्रों में किसानों हेतु सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करें। समिति में धान बेचते समय अव्यवस्था ना रहे, किसानों की मदद के लिए पर्याप्त हमाल की व्यवस्था हो, किसानों को तौल पत्रक अवश्य रूप से मिले। उन्होंने सभी एसडीएम, तहसीलदारों को निरंतर खरीदी केन्द्रों एवं बैंकों का निरीक्षण करने निर्देशित किया। उन्होंने समिति प्रबंधकों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि हमालों को शासन स्तर पर ही भुगतान दिया जाए। हमालों द्वारा मजदूरी की एवज में किसानों से वसूली ना की जाए, यदि ऐसा होता है तो समिति प्रबंधक स्वयं जिम्मेदार होंगे और आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर भोसकर ने कहा कि सभी धान बेचने वाले किसानों को 15 दिवस के भीतर एटीएम एवं रुपे कार्ड उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें। समिति प्रबंधक किसानों को एटीएम कार्ड बनवाने हेतु फार्म उपलब्ध कराएं, समिति स्तर पर ही फार्म भरकर बैंक भेजने के पश्चात बैंक स्तर पर कार्ड तैयार कर किसानों को प्रदान करें। किसानों को बैंकिंग कार्य में किसी भी प्रकार की असुविधा ना हो।

नाबालिग का अपहरण कर तमिलनाडु ले जाने वाले आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार, न्यायालय ने भेजा जेल

कवर्धा(विश्व परिवार)। थाना तरेगांव जंगल पुलिस ने एक नाबालिग के अपहरण और दुष्कर्म के मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा। प्रार्थी द्वारा थाना तरेगांव जंगल में रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी कि उसकी नाबालिग पुत्री को किसी अज्ञात व्यक्ति ने अपहरण कर लिया है। इस पर थाना तरेगांव जंगल में *अपराध क्रमांक 23/2024, धारा 137(2) बीएनएस 06 एवं पाक्सो एक्ट* के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना प्रारंभ की गई। विवेचना के दौरान टीम ने नाबालिग अपहृता को तमिलनाडु के *ग्राम आठिकाडू, थाना वेलागोंडमपट्टी, जिला नमक्कल* से बरामद किया। मौके पर गवाहों की उपस्थिति में बरामदगी पंचनामा तैयार किया गया। महिला अधिकारी द्वारा पीड़िता से पुछताछ कराए गए बयान में यह तथ्य सामने आया कि आरोपी *मुखराम धुर्वे (उम्र 19 वर्ष)* ने उसे बहला-फुसलाकर शादी का प्रलोभन देकर दुष्कर्म किया और फिर तमिलनाडु ले जाकर उसे अपनी पत्नी बताकर मजदूरी कर रहा था। इस आधार पर आरोपी के विरुद्ध *धारा 64(2)(एफ), 64(2)(एम) बीएनएस 06 एवं पाक्सो एक्ट* का इजाफ किया गया।

सूरजपुर कलेक्टर - एस पी ने कानून व्यवस्था के संबंध में ली बैठक

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर एस. जयवर्धन एवं पुलिस अधीक्षक प्रशांत ठाकुर ने आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के संबंध में अपर कलेक्टर, संयुक्त कलेक्टर, सभी एसडीएम, एसडीओपी, तहसीलदार, थाना प्रभारी व अन्य जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली। इस दौरान जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के संबंध में चर्चा की गई और संबंधित अधिकारियों को संयुक्त रूप से कार्य करने को कहा ।

कलेक्टर श्री जयवर्धन ने आगामी स्थानीय चुनाव देखते हुए कहा कि जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी अधिकारी सजग होकर कार्य करें। उन्होंने सभी अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अपने क्षेत्रों में असामाजिक तत्वों के द्वारा की जाने वाली वारदातो पर पैनी नजर रखें। किसी भी तरह की अप्रिय स्थिति की संभावना को देखते ही त्वरित रूप में सख्त कार्यवाही करें।

इसके अलावा उन्होंने जिले में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए हरसंभव उपाय करने के लिए कहा। उन्होंने जिले में सड़क यातायात में व्यवधान उत्पन्न करने वालों पर सख्त कार्यवाही करने एवं सड़कों पर ब्लैक स्पॉट को देखते हुए आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने सड़क किनारे अवैध दुकान लगाने पर भी नियमित कार्यवाही करने के निर्देश दिए। साथ उन्होंने सड़कों पर आवारा पशुओं के विचरण रोकने और यातायात सुचारु करने के लिए भी नियमित पेट्रोलिंग कर कार्यवाही करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री जयवर्धन ने जिले में होने वाले विभिन्न आयोजनों के दौरान जानबूझकर ध्वनि प्रदूषण कर कानून व्यवस्था का उल्लंघन किए जाने पर सख्त कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने गाड़ियों में अवैध रूप से डीजे साउंड सिस्टम लगाने और मानक स्तर से अधिक ध्वनि उत्पन्न कर प्रदूषण करने पर त्वरित एवम सख्त कार्यवाही करने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिए।

बांस की टोकरी नहीं बिकती तो महतारी वंदन योजना की राशि बनती है मददगार

बिरहोर सुनिता के खाते में हर माह आ जाती है एक हजार की राशि

कोरबा(विश्व परिवार)। विशेष पिछड़ी जनजाति समुदाय से आने वाली बिरहोर सुनिता परम्परागत व्यवसाय से जुड़ी हुई है। वह बांस लाकर टोकरियां बनाती है। पति के सहयोग से सूपा, पर्रा, दौरी सहित अन्य घरेलू सामग्री बनाती है। बांस से बनी सामग्रियों को बेचने से जो आमदनी होता है उसी से ही सुनिता का घर चलता है। चूंकि इन सामग्रियों की बिक्री कभी होती है कभी नहीं होती, इसलिए सुनिता को अक्सर पैसे की कमी पड़ती थी। पैसा हाथ में नहीं होने से घर का जरूरी सामान भी नहीं ले पाते थे। इस बीच जब महतारी वंदन योजना प्रारंभ हुई और सुनिता के खाते में हर माह एक हजार की राशि आने लगी तो उनकी अनेक समस्या दूर हो गई। अब वह बेफिक्र है कि बांस की सामग्री बिके न बिके, एक हजार रूपए खाते में जरूर आ जाएंगे और घर का खर्च चलता रहेगा। पाली विकासखंड के अंतर्गत ग्राम डूमरकछार में रहने वाली बिरहोर जनजाति की सुनिता बाई ने बताया कि उसके हाथ में एक साथ कभी भी एक हजार रूपए नहीं आता था। बांस से जो घेरलू सामग्रियां बनती है, उसे कुछ पैसे में बेचकर जैसे-तैसे जीवन चला लेते हैं। जरूरी नहीं कि हर दिन नया सामग्री बन जाए और यह भी जरूरी नहीं कि बांस की बनी सामग्री हर दिन बाजार में बिक जाएं। ग्राहको के मोल-भाव के बीच कुछ रूपए मिल तो जाते हैं, लेकिन घर के अन्य कामों के लिए भी पैसे की आवश्यकता पड़ती है। उन्होंने बताया कि पति भी बांस की सामग्री बनाने में मदद करते हैं। बीपीएल का राशनकार्ड होने और सरकार द्वारा मुफ्त में अनाज देने से घर पर आर्थिक भार नहीं पड़ता। बिरहोर सुनिता बाई ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने महिलाओं के हित में निर्णय लेते हुए उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए महतारी वंदन योजना प्रारंभ की है। इस योजना से हर महीने खाते में एक हजार रूपए मिलता है, इस राशि का उपयोग घर में राशन के सामान के लिये होता है।

संस्कार स्कूल में मनाया गया सशस्त्र सेवा झंडा दिवस

रायगढ़(विश्व परिवार)। शहर की प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्था संस्कार पब्लिक स्कूल में शनिवार को सशस्त्र सेवा झंडा दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल में एक सेल्फी प्वाइंट बनाया गया था, जहां बच्चों के साथ अभिभावकों ने भी सेल्फी ली और सोशल मीडिया में पोस्ट कर देश के वीर जांबाज सैनिकों के कल्याण के लिए आगे आने का आह्वान किया। स्कूल के मार्गदर्शक रामचंद्र शर्मा ने बताया कि हमारी संस्था में हर तीज-त्यौहारों के साथ महत्वपूर्ण दिवसों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसके माध्यम से बच्चे देश की संस्कृतियों व महापुरुषों के जीवन चरित्र से अवगत होते हैं। इसी कड़ी में शनिवार को सशस्त्र सेवा झंडा दिवस मनाया गया। इसमें बच्चों के साथ उनके अभिभावक भी शामिल हुए। स्कूल परिसर में विशेष रूप से बनाए गए सेल्फी प्वाइंट में सेल्फी लेने की होड़ मची रही। बच्चों ने सभी को स्टीकर लगाकर वीर सैनिकों के कल्याण के लिए राशि एकत्र की।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर मंगलवार 10 दिसंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय खेल परिणामों को सुविधाएं भी उत्तम चाहिए

दंडित करने का मकसद

ट्रंप ने प्रस्तावित व्यापार युद्ध का पहला गोला दागा है। इससे दुनिया को संदेश दिया है कि उनका प्रशासन किसी समझौते का ख्याल नहीं करेगा। भारत और यूरोप इसके असर से फिलहाल बच गए हैं, लेकिन लंबे समय तक वे शायद ही बच पाएं। डॉनल्ड ट्रंप ने अमेरिका का राष्ट्रपति पद संभालने के 56 दिन पहले ही अपने तीन प्रमुख व्यापार सहयोगी देशों के खिलाफ आयात शुल्क में भारी बढ़ोतरी का एलान कर दिया है। इसके तहत 20 जनवरी को राष्ट्रपति पद संभालते ही वे कनाडा और मेक्सिको से अमेरिका में आने वाली वस्तुओं पर 25 प्रतिशत आयात शुल्क लगा दिया जाएगा। चीन से आयातित वस्तुओं पर 10 प्रतिशत का अतिरिक्त शुल्क लगेगा। चीन से होने वाले आयात पर पहले ही अलग-अलग, लेकिन ऊंची दरों से आयात शुल्क लगाया जा चुका है। कनाडा और मेक्सिको के साथ अमेरिका का मुक्त व्यापार समझौता है। जाहिर है, इस घोषणा के जरिए ट्रंप ने दुनिया को यह संदेश भी दिया है कि उनका प्रशासन किसी समझौते का ख्याल नहीं करेगा। इस तरह उन्होंने प्रस्तावित व्यापार युद्ध का पहला गोला दागा है। भारत और यूरोपीय देश इसके असर से फिलहाल बच गए हैं, लेकिन लंबे समय तक वे बच पाएंगे, इसकी संभावना कम ही है। राष्ट्रपति चुनाव अभियान दौरान ट्रंप ने इन देशों के खिलाफ भी आयात शुल्क लगाने का इरादा जताया था। उसके मुताबिक भारत से होने वाले आयात पर 10 प्रतिशत का शुल्क लगेगा। ट्रंप की इस घोषणा ने अमेरिकी कारोबार जगत में उथल-पुथल मचा दी है। मंगलवार को यह एलान होते ही शेयर बाजारों में भारी गिरावट देखी गई। उधर कारोबार से जुड़ी संस्थाओं ने दो-टूक कहा कि इस कदम के परिणामस्वरूप अमेरिका में महंगाई तेजी से बढ़ेगी, उद्योगों की लागत बढ़ जाएगी जिससे अमेरिकी निर्यात भी महंगे हो जाएंगे। उधर चीन, मेक्सिको और कनाडा ने जवाबी कार्रवाई की चेतावनी दी है। यानी वे भी अमेरिकी वस्तुओं पर शुल्क लगाएंगे। नतीजा होगा कि उन बड़े बाजारों में अमेरिकी निर्यात और महंगे हो जाएंगे, जिससे वहां अमेरिकी कंपनियों का हिस्सा घटना तय है। आम समझ है कि व्यापार चक्र को इस तरह पलटना किसी के फायदे में नहीं है। ट्रंप ने कहा है कि उपरोक्त तीनों देश मादक पदार्थ और अपराधियों को अमेरिका भेज रहे हैं, इसलिए उन्हें दंडित करने के मकसद से उन्होंने ये कदम उठाया है। मगर ये बात शायद ही किसी के गले उतरेगी।

भूपिंदर सिंह

खेल सुविधाओं के लिए पलायन करने वालों को भी जब अपने ही राज्य में रह कर अपना प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने के लिए सुविधा मिलेगी, तो वे फिर क्यों अपना प्रदेश छोड़ेंगे आज के ओलंपिक खिलाड़ी भी शौकिया न होकर अब पेशेवर हो गए हैं। सदी पूर्व जब जिम थोर्पे के ओलंपिक पदक इस लिए छीन लिए गए थे कि उसने कहीं खेल के नाम पर थोड़ा सा धन ले लिया था। आज अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स महासंघ स्वयं विश्व रिकॉर्ड बनाने पर एक लाख अमरीकी डालर इनाम देता है और भारत में तो कुछ राज्य ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने पर छह करोड़ रुपए भी देते हैं। तभी तो बढ़िया किस्म के खेल उपकरणों का भी महत्व बढ़ गया है। अभी तक बढ़िया खेल सुविधाएं विकसित देशों को ही मिल पा रही थी, मगर अब यह सुविधा हर देश को चाहिए, तभी उच्च परिणाम आएंगे। खेलों में आज उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए खेल उपकरणों से लेकर कृत्रिम प्ले फील्ड तक में काफी सुधार किया जा रहा है। अच्छे खेल परिणामों के लिए खेल सामान की क्वालिटी का योगदान भी बहुत महत्वपूर्ण है, मगर खेल सामान की खरीददारी में बहुत बड़ा गोलमाल है। इस विषय पर पहले भी बहुत बार लिखा जा चुका है, मगर अभी तक इसमें कोई भी सुधार नहीं हो पाया है। हिमाचल प्रदेश के जिला युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के कार्यालयों व शिक्षा संस्थानों में हर वर्ष करोड़ों रुपए का खेल सामान जैम व अन्य माध्यमों से खेल विभाग व शिक्षा निदेशालय खरीद कर आगे देता है, जो बेहद निम्न दर्जे का होता है। इस कॉलम के माध्यम से बार-बार सरकार को सचेत किया जा रहा है कि इस खरीद पर लगाम लगा कर अच्छी क्वालिटी का खेल सामान प्रदेश के विद्यार्थी खिलाडियों को मिले, ताकि हिमाचल प्रदेश के खिलाड़ी भी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर हिमाचल प्रदेश का नाम रोशन कर सकें। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आज खेलों का स्तर बहुत ही ऊपर उठ चुका है। उत्कृष्ट प्रदर्शन के बल पर खिलाड़ी पूरे विश्व में अपने देश का डंका बजा रहे हैं। इस अद्भुत खेल प्रदर्शन के लिए उच्च स्तरीय प्रशिक्षकों व प्रतिभाशाली खिलाडियों के साथ-साथ उनके पास स्तरीय खेल किट व उच्च तकनीकी के खेल उपकरणों का होना भी बहुत ही जरूरी होता है। चिकित्सा क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की बीमारियों को ठीक करने के लिए

खेल सुविधाओं के लिए पलायन करने वालों को भी जब अपने ही राज्य में रह कर अपना प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने के लिए सुविधा मिलेगी, तो वे फिर क्यों अपना प्रदेश छोड़ेंगे आज के ओलंपिक खिलाड़ी भी शौकिया न होकर अब पेशेवर हो गए हैं। सदी पूर्व जब जिम थोर्पे के ओलंपिक पदक इस लिए छीन लिए गए थे कि उसने कहीं खेल के नाम पर थोड़ा सा धन ले लिया था। आज अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स महासंघ स्वयं विश्व रिकॉर्ड बनाने पर एक लाख अमरीकी डालर इनाम देता है और भारत में तो कुछ राज्य ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने पर छह करोड़ रुपए भी देते हैं। तभी तो बढ़िया किस्म के खेल उपकरणों का भी महत्व बढ़ गया है।

आज प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर कई प्रकार के उपकरण विकसित हो चुके हैं, ठीक उसी प्रकार खेल जगत में भी आज के अति मानवीय खेल परिणामों में विकसित प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर बनाई गई आधुनिक खेल सामग्री का विशेष योगदान है। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हो रहा है, हम स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे हैं। इनसान को फिट रहने के लिए किसी न किसी खेल का सहारा लेना पड़ता है। ऐसे में जब लाखों नहीं, करोड़ों खेलेंगे तो उसके लिए खेल उपकरण भी चाहिएं। पूरे विश्व में खेल बहुत बड़ा उद्योग बन कर उभरा है। हमारे देश में आज खेल उपकरणों का उद्योग अरबों रुपए का कारोबार हर वर्ष कर रहा है। खेल किट व खेल उपकरणों के बाजार में अच्छे से अच्छा व घटिया से घटिया सामान उपलब्ध है। जब सरकारी स्तर पर खेल सामान खरीदा जाता है, तो कीमत बढ़िया या मध्यम स्तर के सामान की होगी और समग्री निम्न दर्जे की होगी। इस तरह मूल्य उच्च क्वालिटी का तय कर शेष राशि हड़प ली जाती है। व्यापारी व सामग्री खरीदने वाले अधिकारी मिलकर अधिकांश राशि को चट कर जाते हैं। प्रदेश के महाविद्यालयों में जहां अधिकतर खेल सामग्री महाविद्यालय प्रशासन स्वयं खरीदता है, वहीं पर कुछ खेल सामान पहले शिक्षा निदेशालय मटीरियल्स एंड सप्लाई के अंतर्गत खरीद कर महाविद्यालय को दिया जाता था और अब जैम के माध्यम से खरीदा जा रहा है। मटीरियल्स एण्ड सप्लाई के अंतर्गत खरीदा गया खेल सामान बिल्कुल घटिया किस्म का मिलता रहा है। निम्न दर्जे के हाई जम्प व कबड्डी मैट, मुक्केबाजी रिंग व अन्य खेलों के घटिया उपकरण इसके उदाहरण आज भी देख जा सकते हैं। इस स्कीम के अंतर्गत खरीदे जिम एक साल तो दूर, कुछ महीनों बाद ही कबाड़ हो जाते हैं। लाखों रुपए का खेल सामान तो खरीद लिया, मगर यह कोई नहीं सोचता है कि यह काम में भी लाया जा सकता है या नहीं। इस खेल सामान खरीदने के लिए बनी कमेटी में निदेशालय के अधिकारी व बाबू होते हैं जिन्होंने अपनी जिंदगी में शायद ही कोई खेल खेला हो और जो थोड़ा बहुत खेल खेले हैं और खेल सामान की परख भी रखते हैं, वे भी अपने थोड़े लाभ के लिए आंखें बंद कर लेते हैं। आज जब खेल में स्वास्थ्य स्कीम के अंतर्गत कई करोड़ रुपयों की कृत्रिम प्ले फील्ड जूडो, कुश्ती व खो-खो आदि खेलों के लिए खरीद कर विद्यालयों व महाविद्यालय को दी जा रही है, जहां भी खेल सामान खरीदना हो, वहां पर खरीददारी के लिए जो कमेटी बने, उसमें जिस भी खेल का सामान खरीदना है, उस खेल का प्रशिक्षक व कम से कम दो राष्ट्रीय पदक विजेता खिलाड़ी भी विभागीय अधिकारियों के साथ हों। जिस संस्थान को सामग्री मिले, वहां भी कमेटी देखे कि वह घटिया स्तर का तो नहीं दे दिया। अच्छी प्रशिक्षण सुविधा के अभाव में कई प्रतिभाशाली खिलाड़ी समय से पहले ही खेल को अलविदा कह जाते हैं और जिनके पास धन व साधन हैं, वे अच्छे प्रशिक्षण के लिए हिमाचल प्रदेश से पलायन कर जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में बहुत कम प्रशिक्षण केन्द्र हैं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाला खिलाड़ी बनने के लिए स्कूल व कालेज समय में खिलाड़ी को अच्छी खेल सुविधा उपलब्ध करानी चाहिए। पूरे संसार में जहां के खिलाड़ी श्रेष्ठ हैं, वहां पर स्कूल व कालेज स्तर पर बहुत ही उत्तम खेल सुविधाएं मुहैया हैं। इस स्तर पर अगर हिमाचल प्रदेश में घटिया खेल सामान न खरीद कर उच्च क्वालिटी का खेल सामान खरीदा होगा, तो स्तरीय खेल सुविधा होगी तो जहां जो खिलाड़ी प्रशिक्षण सुविधाओं के अभाव में खेल छोड़ देते हैं, वे अपने घर में रह कर खेल जारी रख सकते हैं। खेल सुविधाओं के लिए पलायन करने वालों को भी जब अपने ही राज्य में रह कर अपना प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने के लिए सुविधा मिलेगी, तो वे फिर क्यों अपना प्रदेश छोड़ेंगे। बात चाहे शिक्षा निदेशालय की हो या किसी भी संस्थान की, अब हिमाचल प्रदेश में उचित मूल्य चुका कर घटिया किस्म का खेल सामान खरीद कर करोड़ों रुपए की बंदरबांट को बंद करके असली खेल सामान खरीद कर हिमाचल प्रदेश के खिलाडियों व देश के गौरव पर तो कुछ दया करो।

आलेख

कांग्रेस मुसलमानों को हाशिये पर रख वोट बैंक समझा.....

कौसर जहां

मुसलमानों को डर दिखाकर कांग्रेस इस देश में कई दशक तक शासन सत्ता में रही। मुसलमान आजादी के बाद भी कई दशकों तक हाशिये पर रहा, लेकिन कभी भी उसे मुख्यधारा में शामिल नहीं होने दिया गया। वजह सिर्फ एक थी मुसलमान को भय दिखा कर उसे अपना वोट बैंक बनाए रखना। मोदी राज में अब पुरानी धारणाएं पूरी तरह बदल गई हैं। जब देश के प्रधानमंत्री 140 करोड़ भारतीयों की बात करते हैं तो मुसलमान भी उनकी नीतियों में, उनके विकसित भारत के विजन में शामिल होता है। हमारे प्रधानमंत्री कहते हैं कि हम एक हैं, तो सेफ हैं तो देश के मुसलमान को डरने की जरूरत नहीं। क्योंकि यह नारा किसी एक समुदाय के लिए नहीं है, बल्कि उन सभी देशवासियों के लिए जिन्हें यहां की विविधता में एकता की संस्कृति पर गर्व है। प्रधानमंत्री मोदी ने किसी योजना में ऐसा नहीं किया कि कोई खुद को अलग महसूस करे। जहां तक विपक्ष की बात है तो उनके लिए यही कहा जा सकता है जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। उनको सब कुछ नकारात्मक ही दिखता है। सैकड़ों कल्याणकारी योजनाओं के केंद्र में सबका साथ, सबका विकास मूलमंत्र सर्वोपरि रहा यानी योजनाओं को किसी खांचे में नहीं बांटा गया और इनका लाभ सभी जरूरतमंद लोगों को मिला। मुझे यह कहने में भी कोई संकोच नहीं कि इन योजनाओं का सबसे बड़ा लाभ देश की अल्पसंख्यक आबादी खास तौर पर मुसलमानों को मिला है। प्रधानमंत्री आवास योजना हो, मुफ्त राशन योजना हो, आयुष्मान स्कीम हो या अन्य कोई कल्याणकारी कार्यक्रम। लिस्ट उठा कर देख लीजिए कहीं कोई भेदभाव नहीं मिलेगा। लाभार्थियों में मुसलमान बड़ी संख्या में शामिल हैं। सच्चर कमेटी की सिफारिशों में देश के मुसलमान की बदहाली बयान की गई थी। कहना चाहूंगी कि यह रिपोर्ट कांग्रेस की विफलताओं का दस्तावेज भी था। क्योंकि मुसलमान सबसे ज्यादा बदहाल हुआ तो कांग्रेस के कई दशकों के कुशासन और राजनीतिक हथकंडे की वजह से हुआ। कांग्रेस ने मुसलमानों को हाशिये पर रख कर उन्हें केवल वोट बैंक समझा। सच्चर रिपोर्ट कांग्रेस सरकारों के ही अधिसंख्य कार्यकाल पर आधारित थी। वे रिपोर्ट बनवाते रहे, अपनी ही विफलताओं को दिखा कर मुसलमानों को डराते रहे लेकिन उनकी भलाई के लिए कुछ नहीं किया, लेकिन आज मैं फख्र फक्र के साथ कह सकती हूं कि हालात तेजी से बदल रहे हैं। अब मुसलमान तुष्टिकरण अस्वीकार्य है और संतुष्टिकरण सबकी भागीदारी का मूलमंत्र है। कांग्रेस के मुस्लिम आरक्षण के कर्नाटक मॉडल की हकीकत मुसलमान समझ रहा है। धर्म के आधार पर आरक्षण का कोई आधार नहीं है। दुर्भाग्य से कांग्रेस और विपक्ष के पास इस तरह के राजनीतिक झुनझुनों के अलावा कोई और विजन नहीं है। कांग्रेस कर्नाटक में सरकारी पब्लिक टेंडर में 4 फीसद आरक्षण का सब्जबाग दिखा रही है और इसके उलट मोदी सरकार और भाजपा शासित राज्य सरकारें मुसलमान को जनकल्याणकारी कार्यक्रमों के माध्यम से समृद्धि का रास्ता दिखा रही हैं। पिछले दस वर्षों में मोदी प्रशासन के दौरान किए गए कई प्रयासों से अल्पसंख्यक समुदायों को लाभ हुआ है। अनुच्छेद 370 के खत्म होने से जम्मू-कश्मीर और लद्दाख, दोनों में अल्पसंख्यकों को समान अधिकार दिए गए हैं। पीएम ने सिखों के धर्म का अहम प्रतीक करतारपुर कॉरिडोर राष्ट्र को समर्पित किया। सभी हज प्रक्रियाएं कंप्यूटरीकृत हो गई हैं, जिससे ऐसा करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। हम नहीं भूल सकते कि पीएम मोदी जब सऊदी प्रिंस से मिले तो उन्होंने हज कोटा बढ़ाने का अनुरोध किया। यह दर्शाता है कि उनके लिए मुसलमान अल्पसंख्यक राजनीतिक हथियार नहीं है बल्कि उन्हें 140 करोड़ भारतीयों की समान चिंता है। रिकॉर्ड 2 लाख भारतीय मुसलमानों, जिनमें 48त्न महिलाएं थीं, ने 2019 में हज यात्रा की। इसके अलावा, मोदी प्रशासन ने कई शहरों में %हुनर हाट' शुरू किए जिससे हजारों अल्पसंख्यक समुदाय के कारीगरों, शिल्पकारों और पारंपरिक रसोइयों को मदद मिली। वक्फ संपत्तियों का उचित उपयोग और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए वक्फ लीजिंग नियमों और वक्फ संपत्तियों की जीआई मैपिंग में सकारात्मक सुधार किए गए। वक्फ संशोधन का मकसद भी यही है । लेकिन दुर्भाग्य से कुछ लोगों को यह रास नहीं आ रहा। वे मुसलमान को बंधुआ बना कर रखना चाहते हैं।

युवाओं में बेरोजगारी की दर अधिक

प्रह्लाद सबनानी

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति की सदस्य शमिका रवि के हालिया रिसर्च पेपर में कई महत्त्वपूर्ण जानकारियां दी गई हैं। भारत के आर्थिक विकास के कई क्षेत्रों के संबंध में तथ्यों पर आधारित सारगर्भित बातें बताने के साथ-साथ यह भी जानकारी दी गई है कि किस प्रकार भारत में अब ग्रामीण इलाके भी अर्थव्यवस्था में अपना योगदान बढ़ा रहे हैं। यह भी कि किस प्रकार भारत में तेज गति से हो रहे आर्थिक विकास का लाभ देश के युवाओं को रोजगार के अधिक अवसरों के रूप में मिल रहा है। किसी भी देश के लिए श्रम की भागीदारी एवं बेरोजगारी, दो अलग-अलग मुद्दे हैं। श्रम की भागीदारी में 18-59 वर्ष के बीच के वे लोग शामिल रहते हैं, जो अर्थ के अर्जन हेतु या तो कुछ कार्य कर रहे हैं अथवा कोई आर्थिक कार्य करने को उत्सुक हैं एवं इस हेतु रोजगार तलाश रहे हैं। पिछले 40 वर्षों के दौरान चीन में श्रम की औसत भागीदारी 75 प्रतिशत से ऊपर रही है अर्थात प्रत्येक 4 में से 3 लोग या तो रोजगार में रहे हैं अथवा रोजगार तलाशते रहे हैं। वियतनाम में श्रम की भागीदारी 72-73 प्रतिशत के बीच रही है। बांग्लादेश में यह 60 प्रतिशत से अधिक रही है परंतु भारत में 5 वर्ष पूर्व तक केवल 50 प्रतिशत के आसपास थी जो आज बढ़कर 57 प्रतिशत हो गई है। अर्थात इतने बड़े देश में कुल कार्य करने योग्य जनसंख्या में से आधे से कुछ कम आबादी या तो रोजगार में नहीं है अथवा रोजगार तलाश भी नहीं रही है। यह स्थिति भारत जैसे देश के लिए ठीक नहीं है। दूसरे, बेरोजगारी से आश्य ऐसे नागरिकों से है, जो रोजगार तलाश रहे हैं, लेकिन रोजगार मिल नहीं रहा। भारत में ऐसे नागरिकों की संख्या मात्र 3 प्रतिशत है। समय के साथ बेरोजगारी की दर में थोड़ा-बहुत परिवर्तन होता रहता है परंतु, जब इस स्थिति को विभिन्न प्रदेशों के बीच तुलना करते हुए देखते हैं, तो बेरोजगारी की दर में भारी अंतर दिखाई देता है। गुजरात, छत्तीसगढ़, कर्नाटक जैसे राज्यों में बेरोजगारी की दर 0.9-1.5 प्रतिशत के बीच है, जबकि केरल में 12.5 प्रतिशत है। आर्थिक विकास में वृद्धि के साथ-साथ रोजगार के अवसर भी अधिक निर्मित होते हैं। इसलिए देश में रोजगार के नये अवसर निर्मित करने के लिए व्यवसाय को बढ़ाना होगा, विकास को बढ़ाना होगा। केवल केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारें समस्त नागरिकों को रोजगार उपलब्ध नहीं करा सकतीं। इस हेतु, निजी क्षेत्र को आगे आना होगा। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के संस्थानों के रोजगार के अवसर निर्मित करने की कुछ सीमाएं हैं। आज भारत में 30 वर्ष के अंदर की उम्र के नागरिकों में बेरोजगारी की दर 12 प्रतिशत है, जबकि देश में कुल बेरोजगारी की दर 3.1 प्रतिशत है। अत: युवाओं में बेरोजगारी की दर अधिक दिखाई देती है। युवाओं में कौशल का अभाव है। इसलिए केंद्र सरकार विशेष कार्यक्रम लागू कर युवाओं में कौशल विकसित का प्रयास कर रही है। विशेष रूप से युवाओं के लिए कहा जा रहा है कि वे 30 वर्ष की उम्र तक काम करना ही नहीं चाहते क्योंकि इस उम्र तक वे रोजगार के अच्छे अवसर ही तलाशते रहते हैं। 30 वर्ष की उम्र के बाद वे दबाव में आने लगते हैं एवं फिर जो भी रोजगार अवसर मिलता है, उसे स्वीकार कर लेते हैं। इसलिए 30 वर्ष से अधिक की उम्र के नागरिकों के बीच बेरोजगारी की दर बहुत कम है। यह स्थिति हाल के समय में अन्य देशों में भी देखी जा रही है। युवाओं की अपनी नजर में सही रोजगार के अवसर के लिए वे इंतजार करते रहते हैं, अथवा अपनी पढ़ाई जारी रखते हैं। आज विशेष रूप से भारत में रोजगार के अवसरों की कमी नहीं है। युवाओं में कौशल एवं मानसिकता का अभाव एवं केवल सरकारी नौकरी को ही रोजगार के अवसर के लिए चुनना ही भारत में श्रम की भागीदारी में कमी के लिए जिम्मेदार तत्व हैं। अधिक डिग्रियां प्राप्त करने वाले युवा रोजगार के अच्छे अवसर तलाश करने में ही लंबा समय व्यतीत कर देते हैं। कम डिग्री प्राप्त एवं कम पढ़े-लिखे नागरिक छोटी उम्र से ही रोजगार प्राप्त कर लेते हैं। यह भी कटु सत्य है कि डिग्री प्राप्त करने एवं वास्तविक धरातल पर कौशल विकसित करने में बहुत अंतर है। आज भी भारत में कई कंपनियों को शिकायत है कि देश में इंजीनीयर्स तो बहुत मिलते हैं परंतु उच्च कौशल प्राप्त इंजीनीयर्स की भारी कमी है। तमिलनाडु में किए गए एक अध्ययन में तथ्य उभर कर आया है कि किसी भी देश के नागरिक जब अधिक उम्र में रोजगार प्राप्त करते हैं, तो उनकी कुल उम्र भर की कुल वास्तविक औसत आय बहुत कम हो जाती है। श्रम की भागीदारी में 18-59 वर्ष के बीच के वे लोग शामिल रहते हैं, जो अर्थ के अर्जन हेतु या तो कुछ कार्य कर रहे हैं अथवा कोई आर्थिक कार्य करने को उत्सुक हैं एवं इस हेतु रोजगार तलाश रहे हैं। पिछले 40 वर्षों के दौरान चीन में श्रम की औसत भागीदारी 75 प्रतिशत से ऊपर रही है अर्थात प्रत्येक 4 में से 3 लोग या तो रोजगार में रहे हैं अथवा रोजगार तलाशते रहे हैं। वियतनाम में श्रम की भागीदारी 72-73 प्रतिशत के बीच रही है। इसके विपरीत जो नागरिक अपनी उम्र के शुरुआती पड़ाव में ही रोजगार प्राप्त कर लेते हैं, उनकी कुल उम्र भर की वास्तविक औसत आय तुलनात्मक रूप से बहुत बढ़ जाती है। भारत में स्टार्टअप्स को बढ़ावा दिया जाना चाहिए एवं युवाओं को सरकारी नौकरी की चाहत को छोड़कर निजी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने के प्रयास करने चाहिए। युवाओं को अपने स्वयं के व्यवसाय प्रारंभ करने के प्रयास भी करने चाहिए।

सुखबीर पर हमले के तार और सियासत

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

अलबत्ता पुलिस ने इस बात का श्रेय लेने की कोशिश जरूर की है कि उसके एएसआई ने ही हमलावर का हाथ झटक कर गोली का रुख सुखबीर बादल की ओर से दीवार की ओर मोड़ दिया। मामला केवल चार सेकेंड का ही था। विक्रम सिंह मजीठिया ने स्पष्ट कर दिया कि वह एएसआई पिछले बाईस साल से बादल परिवार की सुरक्षा में तैनात है और अब परिवार के सदस्य की तरह ही है। पुलिस को सफलता का श्रेय तब दिया जा सकता था यदि हमलावर को बादल के पास पहुंचने से पहले ही पकड़ लिया गया होता। अलगाववादियों के मन में क्या चल रहा है, अब इसको समझने के लिए तो शोध करने की जरूरत नहीं है सुखबीर बादल को उस समय मारने की कोशिश की गई जिस समय वह अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में सेवादार की भूमिका निभा रहा था। बादल परिवार देश विरोधी ताकतों के निशाने पर रहा है, यह सब जानते हैं। उसके पिता प्रकाश सिंह बादल लम्बे अरसे तक पंजाब के मुख्यमंत्री रहे हैं। एक समय उन्हें फख्र-ए-कौम के खिताब से निवाजा गया था। लेकिन कुछ दिन पहले जब सुखबीर बादल को सेवादार व कुछ अन्य सजाएं सुनाई गई थीं तो उसी समय उनके स्वर्गीय पिता प्रकाश सिंह से फख्र-ए-कौम का खिताब भी वापस ले लिया गया था। सुखबीर बादल के साथ अकाली दल से ताल्लुक रखने वाले कुछ अन्य लोगों को भी विभिन्न प्रकार की सजाएं दी गईं। मसलन स्वर्ण मंदिर में चल रहे लंगर में बर्तन साफ करना, शौचालयों की सफाई करना, सेवादार का काम करना इत्यादि। ये सजाएं इन सभी को पंजाब में अकाली दल की सरकार के समय लिए गए कुछेक फैसलों को लेकर दी गई हैं। अकाली दल के हाथ से 2017 में पंजाब की सत्ता खिसक गई थी। उसके बाद से अकाली दल फूट का शिकार हो गया और सत्ता खिसक जाने के कारणों पर भी चिंतन-मनन होता गया और अब भी हो रहा है। जाहिर है चिन्तन-मनन पार्टी के भीतर ही नहीं, बाहर भी होता रहा। सब जानते हैं कि पार्टी के बाहर इस प्रकार की माथापच्ची करने वालों को आज की भाषा में थिंक टैंक कहा जाता है। पार्टी के भीतर हार के क्या कारण स्वीकार किए गए, यह तो पार्टी ही बेहतर जानती होगी, लेकिन बाहर के थिंक टैंकों ने यह स्थापित कर दिया कि हार का मुख्य कारण अकाली दल की सरकार के समय पंजाब में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बेअदबी की कुछ घटनाएं हैं। जाहिर है इसकी जिम्मेदारी प्रकाश सिंह बादल और उनके सुपुत्र सुखबीर बादल के खाते में ही आतीं क्योंकि बड़े बादल साहिब मुख्यमंत्री थे और छोटे बादल साहिब उप मुख्यमंत्री थे। इतना ही नहीं पार्टी के प्रधान की कुर्सी भी पिता-पुत्र के बीच ही रही थी। जब एक बार यह अवधारणा स्थापित हो गई कि बेअदबी के जिम्मेदार प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से 'बादल' ही हैं तो पंजाब में प्रत्येक राजनीतिक दल चुनाव में इस बात की घोषणा करने लगा कि यदि वह जीत गया तो सबसे पहले बेअदबी के लिए उत्तरदायी इन लोगों को सजा दिलाएगा। उन दिनों में पंजाब के आला पुलिस अफसर कुंवर विजय प्रताप सिंह (मूलत: बिहार या उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं), जो आजकल पंजाब में आम आदमी

पार्टी के विधायक हैं, का कहना है कि जिन आरोपों के कारण सुखबीर बादल को आज सजा सुनाई गई है, उन सब का जिक्र मैंने अपनी रिपोर्ट में किया था। दरअसल जिन दिनों कांग्रेस के कैप्टन अमरेन्द्र सिंह पंजाब के मुख्यमंत्री थे, उन्होंने बेअदबी के मामले को लेकर कुंवर विजय प्रताप को जांच का जिम्मा सौंपा था। कुंवर का कहना है कि मेरे बार-बार कहने पर भी कैप्टन ने उस रिपोर्ट पर कार्रवाई नहीं की। कुंवर ने इसको आधार बना कर अपने पद से इस्तीफा दे दिया था और पंजाब की राजनीति में छलांग लगा दी थी। सारी उम्र पुलिस में खपा देने के कारण पंजाब की हवा को सूंघने व थोड़ा बहुत बदल देने योग्य हो ही गए थे। अपनी इसी महारत के चलते वे आम आदमी पार्टी में चले गए और विधायक भी बन गए। लेकिन अपनी रिपोर्ट को अहमियत न मिलने को लेकर बराबर रोते रहे। उनका मानना है कि कैप्टन की तर्ज पर भगवन्त मान भी उनकी रपट पर कार्रवाई नहीं कर रहे थे। अब जब सुखबीर बादल को सजा सुना दी गई, तो कुंवर विजय प्रताप सिंह का कहना है कि यह सब बातें मेरी रपट में हैं। लेकिन आश्चर्य की बात है कि आला पुलिस अधिकारी होते हुए भी विजय प्रताप सिंह सुखबीर बादल पर हमले के मामले में आश्चर्यजनक तरीके से मौन हैं। सजा मिलने के बाद यह तो स्पष्ट हो गया था कि अब सुखबीर बादल एक सेवादार के रूप में स्वर्ण मंदिर के द्वार पर बैठेंगे। लेकिन केवल दो दिन के लिए ही वे वहां बैठेंगे, यह भी स्पष्ट था। उससे भी ज्यादा यह भी स्पष्ट था कि वहां आने वाले श्रद्धालुओं की तलाशी नहीं ले जाती। शायद इससे आसान अवसर व स्थान सुखबीर बादल की हत्या के लिए नहीं हो सकता था। यह साधारण सी बात, असाधारण काम करने वाली पंजाब पुलिस के वे चंद अधिकारी भी जानते ही होंगे जो इस प्रकार की घटनाओं को भांप कर रणनीति बनाते हैं। ऐसे अवसरों पर रणनीति प्राय: यह होती है कि किसी भी प्रकार से हत्यारे को उसके शिकार के पास आने से रोका जाए। कहा जा रहा है कि हमला करने वाला एक दिन पहले उस स्थान की रैकी करने भी आया था। ऐसा भी नहीं कि हमला करने वाला व्यक्ति कोई अज्ञात व्यक्ति हो। उस पर पहले से ही इस प्रकार के मामलों में अनेक मुकद्दमे चल रहे हैं। वह किसी अन्य प्रान्त से भी नहीं आया था। अमृतसर के पास डेरा बाबा नानक में ही रहता है।

संक्षिप्त समाचार

ऐलक श्री भारत सागर जी महाराज की समाधि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित

चौराई/छिंदवाड़ा (विश्व परिवार)। परम् पूज्य समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य ऐलक श्री भारत सागर जी महाराज की समाधि महाराजपुर (सागर) में अचानक होने से पूरी जैन समाज हतप्रभ हो गई। सिलवानी में जन्में (ब्र. सौरभ भैय्या) महाराज मात्र 28 वर्ष के थे। निर्यापक मुनि प्रसाद सागर जी, मुनि पद ्सागर जी, मुनि शीतल सागर जी महाराज के समक्ष आयोजित सभा में दिवंगत भव्य आत्मा के प्रति भावभीनी श्रदांजलि देते हुए मुनि श्री ने कहा कि एलक श्री भारत सागर जी शुरू से आचार्य श्री के कृपा पात्र रहे है एवं बहुत सेवाभावी सरल परिणामी व मृदु स्वभाव के रहे है। निर्यापक श्री योगसागर मुनिराज के संघ में शुरू से साधनारत रहे है। उनके प्रति हम सभी का इच्छामी सहित नमन। ज्ञातव्य हो कि सिलवानी (रायसेन) के श्रावक संतोष जी के इकलौते पुत्र रहे भारत सागर महाराज की दीक्षा सन 2022 में शिरपुर महाराष्ट्र में हुई थी।

शहर के अंदर भारी वाहनों के प्रवेश सुबह 6 से रात्रि 10 बजे तक प्रतिबंधित, आदेश जारी

जगदलपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री हरिस एस द्वारा जन-सुरक्षा एवं सुविधा की दुष्टिकोण से मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 115 एव सहपठित छत्तीसगढ़ मोटरयान नियम 1994 के नियम 215 में पदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए महाराणा चौक (आमागुडा नाका) से शहर के अंदर एवं माड़िन चौक से शहर की ओर आने-जाने वाले सड़क पर भारी मालयान वाहनों का चालन प्रात: 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक प्रतिबंधित करने के आदेश जारी किए हैं। प्रतिबंधित समय में भारी वाहनों का संचालन आड़ावाल, कुरंदी, मारेंगा वायपास होकर किया जाएगा। आदेश का उल्लंघन की दशा में सक्षम अधिकारी द्वारा कार्यवाही की जाएगी। साथ ही अति आवश्यक वस्तुओं व पीडीएस चांवल, दुग्ध, दवाईयां, नगर निगम के वाहन एवं शासकीय वाहन प्रतिबंध से मुक्त रहेंगे।

फेडरेशन ने जिला शिक्षा अधिकारी को परिवीक्षा अवधि समाप्ति आदेश जारी कराने के लिए सौंपा ज्ञापन

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। सीधी भर्ती से नियुक्त शिक्षकों के परिवीक्षा अवधि की समाप्ति का आदेश पारित करने के लिए कार्यवाही जल्दी कराने हेतु छत्तीसगढ़ प्रदेश शिक्षक फेडरेशन जिला इकाई जशपुर के सदस्यों के द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी पी के भटनागर को ज्ञापन सौंपा गया। फेडरेशन के जिला अध्यक्ष विनोद गुप्ता से प्राप्त जानकारी के अनुसार सरगुजा के संभागीय संयुक्त संचालक शिक्षा के द्वारा 26 नवंबर को पत्र जारी करके परिवीक्षा अवधि समाप्ति के लिए दिशा निर्देश जारी किया गया है। जिसमें सरगुजा संभाग के अंतर्गत आने वाले जिलों में सहायक शिक्षकों की परिवीक्षा अवधि समाप्ति हेतु आदेश जिला स्तर से जारी करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया गया था और शिक्षकों के परिवीक्षा अवधि समाप्ति हेतु उनकी गोपनीय चरित्रावली की जांच करने के उपरांत उनकी सूची संभागीय संयुक्त कार्यालय अंबिकापुर को भेजने के लिए भी निर्देशित किया गया था। फेडरेशन के सचिव संजीव शर्मा ने बताया कि जिला स्तर से इस संबंध में कोई आदेश जारी नहीं होने से शिक्षकों की गोपनीय चरित्रावली को लेकर शिक्षकों के बीच संशय की स्थिति बनी हुई है। इसलिए संघ के पदाधिकारियों ने जिला शिक्षा अधिकारी से आग्रह किया कि जिला स्तर से इस संबंध में एक आदेश विकासखंड शिक्षा अधिकारियों एवं प्राचार्यों को जारी किया जाए ताकि शिक्षकों की गोपनीय चरित्रावली समय पर संबंधित कार्यालय में जमा हो सके और उनकी परिवीक्षा अवधि समाप्ति का आदेश भी समय पर जारी हो सके। ज्ञापन देने के लिए फेडरेशन के जिला उपाध्यक्ष एलन साहू, कोषाध्यक्ष अवनीश पांडेय, ब्लॉक सचिव संजय दास सहित कई पदाधिकारी उपस्थित रहे।

आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज जैन जगत के सिरमौर संत हैं : मुनिश्री सर्वार्थ सागर जी महाराज

मिरज/महाराष्ट्र (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज के शिष्य श्रमण मुनी श्री अनुत्तर सागर जी महाराज, श्रमण मुनी श्री प्रणेय सागर जी, श्रमण मुनी श्री प्रणव सागर जी, श्रमण मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी, श्रमण मुनी श्री संकल्प सागर जी और श्रमण मुनी श्री सदभाव सागर जी महाराज जी का उपसंघ मिरज (महाराष्ट्र) में विराजमान हैं।

अपनी अलौकिक ज्ञानधारा से अखिल विश्व में ज्ञान ज्योति के उद्योतक, दार्शनिक-वैज्ञानिक, अद्वितीय चिंतनकार, अभिक्ष्ण ज्ञानोपयोग धारा से प्रवाहित समस्त शिष्यों को न्याय- तर्क, नय-युक्ति, सिद्धांत-व्याकरण, अध्यात्म-आगम के गूढात्म रहस्यों का सरल-सुलभ रीती से अध्ययन कराने वाले निपुण अद्यापक, अनेकानेक शास्त्रों के गहन तल स्पर्शी अध्ययनकार पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन विशुद्ध सागर जी महाराज द्वारा पुरुषार्थ देशना, समय देशना, नियम देशना, समाधितंत्र, सत्यार्थ बोध, वस्तुत्व महाकाव्य जैसे अनेक विद्वत जगत में बहुचर्चीत कृतीयों के कृतिकार आचार्य भगवन विशुद्ध सागर जी महाराज जैन जगत के सिरमौर संत है। सफलता किसी को गिफ्ट में नहीं मिलती।

ऊँचाइयाँ पाने के लिए कठोर अनुशासन, त्याग और इंद्रिय जय की कडी परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त आचार्य श्री ने स्वाध्यायशिलता, उग्र विहार, वात्सल्य और परोपकार भावो के बल पर देश के शीर्षस्थ जैनाचार्य के नाम से ख्यातिप्राप्त है।

550 त्यागी वृन्दो के प्रमुख संघनायक गणाचार्य विरागसागर जी के जेष्ठ श्रेष्ठ शिष्य के रुप में आचार्य श्री विशुद्धसागर जी ने गुरु आदेश उपदेश से 550 संयमी-त्यागीजनो के विशाल संघ के महानायक होने का गौरव पाया। 300 साधूओं की अनुमोदना रुप उपस्थिती में इंदोर नगरीं में होगा पट्टाचार्य महामहोत्सव।

गुरुचरणाम्बूज-चंचरीक अभिषेक पाटील कोल्हापूर ने आचार्य भगवन के चमत्कारीक व्यक्तित्व को स्वर्णिम गौरव ग्रंथ संयोजन संकलन कर जिनशासन का बहुमान बढाया है। इसलिए उन्हें हमारा विशेष मंगल आशीर्वाद। नमोस्तु शासन जयवंत हो।

-अभिषेक अशोक पाटील

आचार्य गुरुवर की सर्वोत्तम समाधि ने बता दिया कि गुरुवर की साधना भी सवोत्तम ही थी : भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

दिल्ली (विश्व परिवार)। 500 शिष्य-प्रशिष्यों का कुशल संचालन करनेवाले युग के सर्वश्रेष्ठ संत, 'अनेकानेक अचेतन तीर्थों के प्रेरणास्रोत, भारत भूमि की युवा शक्ति को व्यस्नों से मुक्त करने वाले, महावीर ङ्क राम आदि महापुरुषों के चरणों से स्पर्शित भूमि पर शाकाहार का शंखनाद करनेवाले, सैंकड़ों की संख्या में मानव जीवन के मार्गदर्शक शास्त्रों ग्रंथों की रचना करनेवाले, संस्कृत भाषा में अनेकानेक प्राचीन ग्रन्थों के टीकाकार, जल बिन्दु महाकाव्य के रचियता, श्रुत संवर्धक, युगप्रमुख शुद्धोपयोगी संत, बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य, सूरिगच्छाचार्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महामुनिराज का मनाया गया 42 वाँ मुनि दीक्षा महोत्सव।

राजधानी दिल्ली कृष्णानगर में विराजमान जिनागय पंथ प्रवर्तक भावलिंगी संत श्रमणाचार्य गुरुवर श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ससंघ (38 पीछी) सानिध्य मैं गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामु ?निराज की महामह पूजा-आराधना एवं विनयांजति सभा के माध्यम से विशालधर्म सभा के मध्य सम्पन्न हुआ।

परमपूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज ने अपने दीक्षा- शिक्षा गुरु वर के दीक्षा दिवस पर अपनी श्रद्धा-भक्ति-समर्पण पुष्प गुरु चरणों में समर्पित- करते हुए कहा आज का दिन गुरु चरणों को छूने का दिन है। आज के दिन इस युग के महानयोगी ने इस पंचम काल की आश्चर्यकारक मुनि दीक्षा ग्रहण की थी। जब किसी का जन्म होता है तब यह कोई नहीं जानता कि यह कोई महापुरुष बनेगा। पूज्य आचार्यश्री ने अपनी अल्प आयु में ही संयम दीक्षा धारण कर ली थी। 09 दिसम्बर 1983 का वह पावन दिन था जब मात्र 20 वर्ष की अल्पवय में ही औरंगाबाद की धरती पर परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महामुनिराज से क्षुल्लक पूर्णसागर जी ने मुनिदीक्षा धारण की थी और नाम पाया था मुनिश्री विरागसागर जी मुनिराज ।9 वर्ष का अल्प मुनिदीक्षा का काल व्यतीत हुआ और गुरुदेव को 08 नवम्बर 1992 द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र पर 'आचार्य पद दे दिया गया। आचार्य गुरुवर ने स्वयं दीक्षा लेकर अनेकानेक भव्यात्माओं को संसार-दु:खों से मुक्ति का मार्ग दिखाकर अपने साधना का श्रेष्ठ फल उत्तम ही नहीं सर्वोत्तम समाधि के रूप में प्राप्त किया है। गुरुवर की सर्वश्रेष्ठ समाधि ने यह बता दिया कि उनके साधना काल की विशुद्धि भी सवोत्कृष्ट ही रही है। आज वे जहाँ भी हैं श्रेष्ठ स्थान पर ही हैं। गुकवर के 42 वें मुनिदीक्षा दिवस पर इन्हीं शुभ भाव सहित तय भक्ति युत: कोटिश: नमोस्तु है कि जैसे गुरुवर हमें आशीष देते रहते थे वैसे ही सदैव हमें अपना मंगल शुभाशीष प्रदान करते रहें एवं हम सब भी गुरुवर की तरह साधना के सर्वोत्तम फलों को प्राप्त करें।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु 11 दिसंबर को नई दिल्ली में राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार विजेताओं को बधाई देंगी

महिला नेतृत्व वाली पंचायतें चमकीं, राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार विजेताओं में 42 प्रतिशत का नेतृत्व महिलाएं कर रही हैं

हरदीभाटा गांव को सामाजिक रुप से न्यायसंगत एवं सामाजिक रुप से संरक्षित पंचायत पुरस्कार घोषित

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। पंचायती राज मंत्रालय ने मूल्यांकन वर्ष 2022-2023 के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की घोषणा की है। ये पुरस्कार उत्कृष्टता के एक मानक के रूप में जमीनी स्तर पर समावेशी और सतत विकास को आगे बढ़ाने में देश भर में पंचायती राज संस्थानों के अनुकरणीय प्रयासों को स्वीकार करते हैं। राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार 2024 के लिए सम्मान समारोह 11 दिसंबर, 2024 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में होगा, जहाँ माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु पुरस्कार विजेताओं/प्राप्तकर्ताओं को पुरस्कार प्रदान करेंगी।

इस वर्ष, विभिन्न श्रेणियों के तहत 45 पुरस्कार विजेताओं का चयन किया गया है, जो जमीनी स्तर पर शासन और सामुदायिक विकास में उपलब्धियों के व्यापक फलक को दर्शाता है। श्रेणियों में दीन दयाल उपाध्याय पंचायत सतत विकास पुरस्कार, नानाजी देशमुख सर्वोत्तम पंचायत सतत विकास पुरस्कार, ग्राम ऊर्जा स्वराज विशेष पंचायत पुरस्कार, कार्बन न्यूट्रल विशेष पंचायत पुरस्कार और पंचायत क्षमता निर्माण सर्वोत्तम संस्थान पुरस्कार शामिल हैं। ये पुरस्कार गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य, बाल कल्याण, जल पर्याप्तता, स्वच्छता, बुनियादी ढांचे के विकास, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और जलवायु स्थिरता जैसे प्रमुख क्षेत्रों में उपलब्धियों को मान्यता देते हैं। इस श्रेणी में छत्तीसगढ के धमतरी जिला के नागरी ब्लाक के हरदीभाटा गांव को दिन दयाल उपाध्याय पंचायत सतत विकास के अंतर्गत सामाजिक रुपसे न्यायसंगत एवं सामाजिक रुप से संरक्षित पंचायत के तौर पर पुरस्कार घोषित हुआ है।

इस वर्ष प्रतियोगिता में 1.94 लाख ग्राम पंचायतों ने भाग लिया। पुरस्कार प्राप्त करने वाली 42 पंचायतों में से 42त्न पंचायतें महिला नेतृत्व वाली हैं। सावधानीपूर्वक चयन प्रक्रिया में ब्लॉक स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक 5 विभिन्न समितियों द्वारा सतत विकास लक्ष्यों (एलएसडीजी) के स्थानीयकरण के साथ जुड़े विभिन्न विषयगत क्षेत्रों में पंचायतों के प्रदर्शन का गहन मूल्यांकन शामिल था। यह प्रक्रिया पारदर्शिता को बढ़ावा देने और पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआई)/ग्रामीण स्थानीय निकायों (आरएलबी) के बीच प्रतिस्पर्धात्मक भावना को प्रोत्साहित करने के लिए मंत्रालय की अटूट प्रतिबद्धता को उजागर करती है।

जो मनुष्य परिस्थितियों का रोना रोता है, वह जिंदगी भर दु:खी बना रहता है : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

इंदौर (विश्व परिवार)। कर्म के खेल बड़े निराले होते हैं जब तक कर्म आपके अनुकूल होते हैं, तो आप प्रसन्न नजर आते हो, और थोड़ी सी प्रतीकूलता क्या आई कि आप दु:खी हो जाते हो, जो मनुष्य परिस्थितियों का रोना रोता है, वह जिंदगी भर दु:खी बना रहता है, संत कहते है कि सच्चे अर्थों में सुख दु:ख बाहर की बस्तु नहीं, सु:ख दु:ख मन का है यदि हमने प्राप्त को पर्याप्त मान मन को समझा लिया तो हम दु:ख को महसूस नहीं करेंगे, जिसको विधी के विधान पर विश्वास होता है, वह निमित्तों से प्रभावित न होकर अपनी सोच को सकारात्मक रखता है उपरोक्त उद्‌गार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने तिलकनगर स्थित कृष्णा पव्लिक स्कूल के प्रागंण में प्रात:कालीन धर्म सभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने कहा कि पूरा खेल मन का है यदि हमने समझ लिया कि मेरे जीवन में जो कुछ भी घट रहा है वह संयोगाश्रित है, अनुकूल संयोग और प्रतिकूल संयोग हमारे आधीन नहीं है वह कर्म के आश्रित है, सुख बाहर नहीं है सुख भीतर है, जब आप सुख का स्वागत करते हो तो दु:ख को भी स्वीकार करो उन्होंने कहा कि महापुरुषों को भी कर्म के खेल को सहना पड़ा भगवान पारसनाथ स्वामी का चरित्र देख लो दस भव तक उनको सहना पड़ा, मुनि श्री ने कहा कि अनुकूलता में खुशी मत मनाओ और प्रतिकूलता में कूलो मत दौनों ही स्थतियों में समता को अपने अंतरमन में समाहित कीजिये, जो भी घट रहा है वह कर्माधीन है तत्व की समझ सोच व्यक्ती को सकारात्मक बनाती है प्राप्त को पर्याप्त मानोगे तो जीवन में सुखी नजर आओगे, निमित्तों से अप्रभावित होंने की कला सीखिये, किसी घटना के घट जाने पर उसको बार बार दिमाग में मत लाइये। नजरअंदाज और बरदाश्त करने की कला आपके पास आ गई तो फिर कभी आप परेशान नहीं होगे।उपरोक्त जानकारी देते हुऐ धर्म प्रभावना समिति के प्रवक्ता अविनाश जैन ने कहा कि दौपहर तीन से चार बजे तक पांडाल में समयसार का स्वाध्याय चल रहा है वंहीं सांयकाल 5ः45 से, विश्वप्रसिद्ध शंकासमाधान कार्यक्रम यहीं संपन्न होगा।

-अविनाश जैन

परमात्मा की आरती जीवन को प्रकाशमान करती है, बच्चों ने प्रतिदिन आरती का लिया संकल्प

रायपुर (विश्व परिवार)। खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वर जी की प्रेरणा से प्रति रविवार को बच्चों के मन मस्तिष्क में सुसंस्कार के बीजारोपण करने श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर में सकारात्मक पहल करते हुए बच्चों को प्रभु नवांगी पूजन, देववंदन विधि सिखाई जाती है, इसी तारतम्य में आज बच्चों को परमात्मा व दादागुरुदेव की आरती व मंगल दीपक की सम्पूर्ण विधी सिखाई गई। अनुमोदना स्वरूप बच्चों को पुरस्कृत किया जाता है। श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर व दादाबाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष संतोष बैद व महासचिव महेन्द्र कोचर ने बताया कि इस रविवारीय सत्र में बच्चों को प्रभु, दादागुरुदेव की आरती व मंगल दीपक के दोहे, दोहों की राग आदि की जानकारी दी गई। जैन मंदिरों में प्रतिदिन प्रात: व संध्याकाल में आरती होती है। महासचिव महेन्द्र कोचर ने कहा कि रायपुर के जैन मंदिरों में संध्या आरती में नगण्य उपस्थित चिंता की बात है, आरती में ज्यादा से ज्यादा श्रावक श्राविकाओं को भाग लेने अभियान चलाया जाना चाहिए। आज बच्चों ने प्रतिदिन आरती में भाग लेने का संकल्प लिया। प्रत्येक रविवार को प्रात: से ही बच्चे पूजन के वस्त्र जैन संस्कृति के परिचायक धोती दुप्पटा पहन कर आते हैं, तथा अपने मधुर कंठ से प्रभु भक्ति के श्लोक, नवांगी पूजन के दोहों की भाव पूर्ण अभिव्यक्ति से संपूर्ण मंदिर परिसर भक्ति रस से ओतप्रोत हो जाता है। यही नहीं इस प्रयास से बच्चो के माता पिता भी प्रात: से ही पूजन में आने लगे हैं। ट्रस्टी निलेश गोलछा ने बताया कि ट्रस्ट द्वारा भावी पीढ़ी को संस्कारित करने रात्रि धार्मिक पाठशाला का भी संचालित हो रही है। जय जय आरती आदि जिनंदा, नाभिराया मरुदेवी के नंदा। पहली आरती पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे।। आरती के दोहों के सामुहिक स्वर में बच्चों ने श्री सीमंधर स्वामी जिन मंदिर में प्रभु प्रतिमा के सम्मुख आरती के दीपक प्रकाशमान किये तो मंदिर में अलौकिक दृश्य उपस्थित हो गया। आज के परमात्म भक्ति अनुमोदना पुरस्कार के मुख्य लाभार्थी स्वर्गीय गुलाबचंद भंवरीदेवी के आत्म श्रेयार्थ श्रीमती वर्तिका वर्धमान चोपड़ा परिवार है, ट्रस्टी डॉ योगेश बंगानी ने आगे बताया कि परमात्मा के पश्चात दादागुरुदेव की आरती मंगल दीपक हुआ साथ ही चारों दादागुरुदेव के सम्मुख विधिपूर्वक गुरुवंदन की प्रक्रिया सिखाई गई, बच्चों ने दादागुरुदेव का विधिपूर्वक खमासमना देकर वन्दन किया। अंत में दादागुरुदेव इक्तिसा का पाठ किया गया।

मण्डल आयुक्त झाँसी करेंगे मण्डलीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता का उद्‌घाटन

तालबेहट में आज से दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता में होंगी विभिन्न स्पर्धाएं

ललितपुर (विश्व परिवार)। बेसिक शिक्षा विभाग के बच्चे मंडल स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में अपना प्रदर्शन करने हेतु तालबेहट में जुटेंगे। इस प्रतियोगिता का उद्घाटन झाँसी मंडल के आयुक्त विमल कुमार दुबे आई.ए.एस. के कर कमलों से होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक अरुण कुमार शुक्ला पी.ई.एस. करेंगे व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रणवीर सिंह संयोजक होंगे। जिसमें झाँसी व जालौन के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी विशिष्ट अतिथि होंगे। यह जानकारी नोडल अधिकारी बी.ई.ओ. समर सिंह ने दी एवं उन्होंने बताया कि इन खेलों में दौड़, कूद, खो-खो, कबड्डी, डिस्क-गोला फेंक सहित कई स्पर्धाएं एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे जिनमें विभागीय बच्चों द्वारा स्थानीय लोकनृत्य लोकगीत कविता गायन आदि विधायें शामिल रहेंगी। इन सब खेलों के लिए पूर्ण तैयारियां हो चुकी हैं इस बार के खेलों के महाकुम्भ का आयोजन बेमिशाल तथा अद्वितीय होगा प्रतिभाग करने बाले बच्चों को उचित पुरस्कार आदि की व्यवस्था की गयी। एक दिन पूर्व क्रीड़ा स्थल पर मण्डलीय सहायक शिक्षा निदेशक अरुण कुमार शुक्ला, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रणवीर सिंह, खण्ड शिक्षा अधिकारी राजकुमार पुरोहित, नरेश कुमार रावत, समर सिंह, कु. शैलजा व्यास, गौरव शुक्ला, भुवनेन्दु अरजरिया तथा शिक्षक देवेश शर्मा, दिलीप राजपूत, विजय मिश्रा प्रशांत राजपूत, श्याम प्रकाश चतुर्वेदी, शैलेन्द्र रावत, धर्मेंद्र उपाध्याय, जनार्दन पाल, महेंद्र बिलगईयां, धर्मेंद्र जैन, पूर्णेन्द्र सिंह, विशाल गुप्ता, रियाज अहमद, विश्वेन्द्र सिंह, दीपक बबेले, राकेश द्विवेदी, पुष्पेंद्र जैन, अभिषेक अग्रवाल, दीपक अग्रवाल, गौरव त्रिपाठी, अमरेश राय सहित कई शिक्षक व विभागीय लोग उपस्थित रहे। सहायक अध्यापक विशाल जैन पवा ने कहा मैत्रीपूर्ण खेलों से सद्भावना एवं सौहार्द में वृद्धि होती है, जिसमें हार-जीत की भावना नहीं होना चाहिए। निश्चित ही बेसिक के यह बच्चे देश का भविष्य हैं जो विश्व में देश का परचम फहराएंगे।

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग सुविधा हेतु आवेदन 11 दिसंबर तक

रायपुर (विश्व परिवार)। राजीव युवा उत्थान योजना के तहत जिले के छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे रेल्वे, बैंकिंग, एस.एस.सी. अन्य के लिए नि:शुल्क कोचिंग दिए जाने का प्रावधान है। जिसमें 100 सीटों के लिए आवेदन मंगाया गया है। इसके लिए विद्यार्थियों को 11 दिसंबर तक आवेदन करना होगा। इसमें अनुसूचित जाति के लिए 30, अनुसूचित जनजाति के लिए 50, अन्य पिछडा वर्ग के लिए 20 सीट आरक्षित की गई है। इसके अलावा वर्गवार 33 फीसदी सीट महिलाओं के लिए आरक्षित की गई है। इसमें विद्यार्थियों को एक हजार रूपए स्कॉलरशिप देने का भी प्रावधान है। विद्यार्थियों की न्यूनतम आयु 20 वर्ष व अधिकतम 30 वर्ष निर्धारित की गई है।

दिल्ली जैन समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति सुनील जैन की विश्वास नगर में सरेआम निर्मम हत्या करने वाले हत्यारों की तुरंत हो गिरफ्तारी : विश्व जैन संगठन

विश्व जैन संगठन ने की सुनील जैन और उनके परिवार के लिए न्याय की मांग

दिल्ली (विश्व परिवार)। 8 दिसंबर 2024 की रात्रि 8 बजे विश्व जैन संगठन के पांडव रोड, विश्वास नगर में स्थित मुख्य कार्यालय में आयोजित कार्यकारिणी की विशेष सभा में श्री सुनील जैन की निर्मम हत्या पर सभी सदस्यों ने रोष व्यक्त करते हुए दिल्ली पुलिस से अंदाजा लगाने की अपेक्षा हत्यारों को गिरफ्तार कर सुनील जैन और उनके परिवार के लिए न्याय की मांग की और सभी सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की।

विशेष सभा में संगठन के अध्यक्ष संजय जैन, उपाध्यक्ष यश जैन, मंत्री मनीष जैन, कोषाध्यक्ष मयंक जैन, मीडिया प्रभारी आकाश जैन, सम्मानित सदस्य अशोक जैन, निपुण जैन, अनुज जैन, अमित जैन और महिला प्रकोष्ठ संयोजिका श्रीमती रुचि जैन व सभा में उपस्थित अन्य सभी सदस्यों ने घटना पर रोष प्रकट करते हुए परिवार के लिए न्याय की मांग के साथ पूर्वी दिल्ली में व्यापारियों की सुरक्षा की पुरजोर मांग की ताकि ऐसी पुनरावृति न हो।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर मंगलवार 10 दिसंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर ने बिलाईगढ़ क्षेत्र का आकस्मिक निरीक्षण किया

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। कलेक्टर धर्मेश साहू और परियोजना निदेशक हरिशंकर चौहान ने विगत दिवस बिलाईगढ़ ब्लॉक में विभिन्न कार्यों का आकस्मिक निरीक्षण किया। कलेक्टर धर्मेश साहू ने सर्वप्रथम आत्मानद स्कूल पवनी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने लम्बे समय से अनुपस्थित शिक्षकों पर कार्यवाही करने एवं प्रयोगशाला को साफरखने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने आंगनबाडी केंद्र के पवनी में बच्चों की दर्ज संख्या की जानकारी के साथ स्वास्थ्य परीक्षण, आंगनबाडी की गतिविधि, बालगीत, खेलकूद, पूरक पोषण आहार के बारे मे भी जानकारी ली। उन्होंने ग्राम खजरी में सामुदायिक शौचालय के निरीक्षण के दौरान पंचायत के सरपंच और सचिव को सफाई के निर्देश दिये। कलेक्टर ने गौठान को गौशाला के रूप मे परिवर्तित करने प्रस्ताव मंगाया। ग्राम पंचायत बांसउरकुली में आदिवासी विकास विभाग द्वारा संचालित छात्रावास का निरीक्षण किये तथा महिला स्वसहायता समूह की गतिविधियों को देखते हुऐ उनको प्रेरित भी किये। दौरे में कलेक्टर ने सभी अधिकारी कर्मचारी को समझाइश दी कि शासन के किसी भी कार्यों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। इस दौरान अनुविभागीय अधिकारी राजस्व बिलाईगढ़ वर्षा बंसल, तहसीलदार कमलेश सिदार, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत प्रतीक प्रधान एवं अन्य विभागीय अधिकारी कर्मचारी मौजूद थे।

नक्सलियों ने पुलिस बेस कैंप पर किया हमला

बीजापुर(विश्व परिवार)। बीजापुर जिले में एक बार फिर नक्सलियों ने पुलिस बेस कैंप पर हमला किया है. तीन दिनों में यह दूसरा नक्सली हमला है. बीजापुर एसपी डॉ जितेंद्र यादव ने कैम्प पर फायरिंग की पुष्टि की है. पामेड़ थाना अंतर्गत जीड़पल्ली पुलिस कैंप पर नक्सलियों ने हमला किया है. पुलिस नक्सलियों के बीच गोलीबारी में तीन जवानों को मामूली चोट आई है. जवानों का बेस कैंप में प्राथमिक इलाज चल रहा है. बताया जा रहा है कि इन हमलों के पीछे सेंट्रल कमेटी के शीर्ष नेता हिडमा का हाथ है.पुलिस के आला अधिकारियों की माने तो बड़े नक्सली नेता खुद की प्राणों की चिंता करते हुए आस-पास के राज्यों में भाग रहे हैं. ऐसे में जाते-जाते बौखलाहट में पुलिस कैंप पर हमला कर निचले कैडर के मनोबल को बढ़ाए रखने का प्रयास कर रहे हैं.

पंचायतों में मनाया गया रोजगार दिवस

बीजापुर(विश्व परिवार)। जिले की पंचायतों में 7 दिसंबर को रोजगार दिवस मनाया गया। महात्मा गांधी नरेगा योजनांतर्गत जाबकार्डधारी परिवारों को वर्ष भर में 100 दिवस रोजगार उपलब्ध कराये जाने के प्रावधान है। जाबकार्ड धारी मजदूरों को प्रत्येक दिवस उनके कार्य के बदले 243 रुपए की मजदूरी प्रदान की जाती है। आधार आधारित भुगतान प्रणाली के आने से मनरेगा के मजदूरी की राशि भारत सरकार से सीधे मजदूरों के लिंक खाते में प्राप्त होती है। जिस किसी श्रमिक को अपना भुगतान प्राप्त हुआ है अथवा नहीं जन मनरेगा एप्लिकेशन के माध्यम से देख भी सकते हैं। मजदूरों को मजदूरी भुगतान के लिए कहीं भटकना नहीं पड़ेगा, मजदूर देश के किसी भी कोने में जाकर ग्राहक सेवा केंद्र, बैंक में जाकर तत्काल अपने मजदूरी की राशि निकाल सकते है। उक्त जानकारी ग्राम पंचायतों में श्रमिकों को देते हुए बैकिंग सेवाओं में आने वाली कठिनाइयों के बारे में जागरूकता लाने रोजगार दिवस में अवगत कराया गया। प्रत्येक माह 7 तारीख को पंचायतों में रोजगार दिवस के आयोजन करने के निर्देश हैं, जिसमें योजनान्तर्गत नवीन प्रावधानों के अलावा जाबकार्ड धारी श्रमिकों की आने वाली समस्याओं का समाधान किया जाता है।

ट्रैक्टर पलटने से चालक की मौत

जशपुर(विश्व परिवार)। आज सुबह लगभग 10:00 बजे जशपुर जिले के रणबीरपुर चौकी क्षेत्र अंतर्गत ग्राम गौरमाटी में एक ट्रैक्टर पानी टैंकर सहित अनियंत्रित होकर पलट गया। इस दु:खद घटना में ट्रैक्टर चालक नरेश साहू उर्फ छोटे लाल, पिता रोहित साहू, उम्र 40 वर्ष, निवासी पवनतरा, थाना सिंघनपुरी जंगल की मौके पर ही मृत्यु हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ट्रैक्टर सड़क पर अनियंत्रित होकर पलट गया, जिससे चालक की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही चौकी रणबीरपुर पुलिस मौके पर पहुंची और मर्ग कायम कर लिया। पुलिस ने इस घटना की विवेचना प्रारंभ कर दी है और संबंधित प्रकरण में नियमानुसार विधिक कार्रवाई की जा रही है। पुलिस प्रशासन ने दुर्घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी है, और मामले में आगे की कार्रवाई के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

सड़कों को सुरक्षित बनाने स्थानीय अधिकारियों का दल बना कर करें सर्वे : कलेक्टर

जशपुरनगर(विश्व परिवार)। जिले में सड़कों को सुरक्षित बनाने के लिए शनिवार को जिला कार्यालय सभाकक्ष में जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक का आयोजन कलेक्टर रोहित व्यास एवं पुलिस अधीक्षक शशिमोहन सिंह की अध्यक्षता में किया गया। इस बैठक में कलेक्टर ने दुर्घटना संभाव्य क्षेत्रों में पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था के लिए हाई मास्ट लाइट एवं स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था करने को कहा। बैठक में कलेक्टर ने दुर्घटनाओं की संख्या को कम करने के लिए दुर्घटना संभाव्य क्षेत्रों की पहचान हेतु सर्वे स्थानीय अधिकारियों का दल बनाकर करने हेतु निर्देशित किया। इस दल में स्थानीय एसडीएम, एसडीओपी, तहसीलदार, थानेदार, यातायात, सड़क निर्माण एजेंसियों के अधिकारी शामिल होंगे। ये दल दुर्घटना संभाव्य क्षेत्रों की पहचान कर उन्हें सुरक्षित करने हेतु रेडियम एवं रेफ्लेक्टिंग स्टिकर लगाने, रम्बलिंग स्ट्रीप, पेड़ों की छटाई, स्टॉपर एवं ब्लिंकर लगाने, ज़ेब्रा क्रॉसिंग बनाने, स्टॉपर लगाने आदि के सुझाव देकर उन्हें पूरा करवायेगी। इस अवसर पर लोरो घाट में कॉन्वेक्स दर्पण लगाने के साथ सड़कों पर लगे संकेतकों को व्यवस्थित कराने के निर्देश दिए गए। राष्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य राजमार्गों के किनारे बसे ग्रामों में लोगों को जागरूक करने तथा किसी दुर्घटना की स्थिति में घायलों की प्राथमिक सहायता के लिए युवाओं को श्सड़क सुरक्षा मितानश् बनाया जाएगा। ये स्वयंसेवक मितान ग्राम के लोगों को सड़क संबंधित नियमों के लिए जागरूक करेंगे साथ ही इन्हें घायलों को प्राथमिक सहायता दिलाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त उन्हें आपातकालीन स्थिति में संपर्क एवं सहायता के लिए सभी आवश्यक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा ताकि सड़क हादसों की स्थिति में त्वरित जानकारी के साथ सहायता उपलब्ध कराई जा सके। इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्वयंसेवकों को सम्मानित भी किया जाएगा। कलेक्टर ने सभी ट्रेक्टर एवं मालवाहक गाड़ियों में अनिवार्य रूप से रिफ्लेक्टर स्टीकर एवं स्पष्ट प्रदर्शित नम्बर प्लेट लगवाने के लिए अभियान चलाने के लिए परिवहन विभाग को निर्देश दिए। उन्होंने सड़क हादसों के समय सूचना मिलते ही सक्षम अधिकारियों को जल्द से जल्द घटना स्थल पर पहुंचने के निर्देश दिए। सड़क सुरक्षा के लिए मद्यपान कर वाहन चलाने वालों पर सख्त रुख अपनाने के लिये पुलिस अधीक्षक ने विशेष अभियान चलाकर प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश दिए। कलेक्टर व एसपी ने कलेक्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक कार्यालय समेत सभी शासकीय संस्थाओं के कर्मचारियों द्वारा लोगों को जागरूक करने लिए सीट बेल्ट एवं हेलमेट अवश्य रूप से पहन कर आने को कहा। उन्होंने स्कूली बच्चों के लिए लर्निंग लाइसेंस हेतु शिविर लगाने, रोड निर्माण के दौरान स्पष्ट डाइवर्जन तथा साइन बोर्ड लगवाने के निर्देश दिए। स्पीड ब्रेकर को सुरक्षित बनाने के लिए उसके आस पास ज़ेबरा क्रॉसिंग, रम्बल स्ट्रिप, साइन बोर्ड अवश्य लगाने तथा मानकों के अनुसार ही उनका निर्माण करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर अपर कलेक्टर प्रदीप कुमार साहू, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनी, सभी एसडीएम सहित अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर संबित मिश्रा ने विकास कार्यो की जानकारी लेने पहुंचे जिले के अंतिम छोर बेंगलूर एवं सडार

स्कूल भवन मरम्मत, पुलिया निर्माण सहित विभिन्न बुनियादि सुविधाओं की व्यवस्था हेतु दिए आवश्यक निर्देश

बीजापुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर संबित मिश्रा ने विकास कार्यो की जानकारी लेने भैरमगढ़ ब्लॉक का किया सघन निरीक्षण इस दौरान सीईओ जिला पंचायत हेमंत रमेश नंदनवार भी कलेक्टर के साथ मौके पर उपस्थित थे। कलेक्टर ने भैरमगढ़ के कस्तूरबागांधी आवासीय विद्यालय में व्यवस्थाओं का जायजा लिया एवं जिले के अंतिम छोर पर दंतेवाड़ा जिले की सीमा पर बसे ग्राम पंचायत बेंगलूर एवं सडार पहुंचकर विकास कार्यो की जानकारी ली। भैरमगढ़ के कस्तूरबा आवासीय विद्यालय में छात्राओं से मिलकर पढ़ाई, लिखाई में संस्था में मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी ली। छात्राओं ने कलेक्टर से आत्मीयता पूर्वक मिलकर अपनी पढ़ाई संबंधी जानकारी दी। वहीं विद्यालय में कम्प्यूटर एवं अतिरिक्त कक्ष की मांग के साथ ही विद्यालय के डायनिंग हाल की स्थिति एवं पढ़ाई हेतु उपलब्ध प्रोजेक्टर के मरम्मत कराने अवगत कराया। कलेक्टर ने छात्राओं की समस्या से अवगत होकर डाईनिंग हाल एवं प्रोजेक्टर के मरम्मत हेतु निर्देश दिए। तत्पश्चात जिले के अंतिम छोर बेंगलूर में बालक आश्रम एवं आंगनबाड़ी का निरीक्षण किया एवं स्कूल भवन का मरम्मत कराने के निर्देश दिए।

हाथी शावक की मौत, पोटाश बम से हुआ था घायल ठीक होते ही मां से मिलाने की थी तैयारी

गरियाबंद(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में पोटाश बम से घायल हाथी शावक अघन की आज मौत हो गई। दरअसल, शावक को मां और झुंड छोड़कर चले गए। जिसके बाद डॉक्टरों की टीम शावक को स्वस्थ करने में जुट गई। साथ ही ट्रैकर टीम ने दल के मूवमेंट पर भी नजर रख हुए थे। ठीक होते ही शावक को मां से मिलाने की तैयारी थी। लेकिन शावक अघन ने दोपहर 3.35 बजे अंतिम सांस ली। उदंती सीता नदी अभ्यारण्य के उपनिदेशक ने इसकी पुष्टि की है। बता दें कि घायल शावक को उसकी मां और झुंड छोड़कर चला गया था। जिसके बाद नन्हें शावक की सलामती में उपनिदेशक वरुण जैन के नेतृत्व में 30 अफ्सर, कर्मी के अलावा दो महावत और वाइल्ड लाइफ चिकित्सक डॉक्टर राकेश वर्मा 24 घंटे शावक की निगरानी व उसके मूमेंट में लगे हुए थे। हाथी के शावक की मां को ट्रैकर टीम ने 5 किमी की परिधि में ट्रैक किया था। लेकिन शुक्रवार को 'अघन' की तबियत बिगड़ गई थी। डॉक्टर्स तौरेंगा रेंज में शावक का उपचार कर रहे थे। आज दोपहर 3.35 बजे शावक अघन ने अंतिम सांस ली। हाथी के शावक के ऑपरेशन को देखने सीसीएफसतोविषा समाजदार रिसगांव रेंज के सालेहभाठ पहुंची थी। उन्होंने शावक को स्वस्थ्य करने चलाए जा रहे अभियान को करीब से देखा था। शावक के सकारात्मक व्यवहार को देखते हुए महिला अफ्सर ने शावक का नामकरण कर अघन नाम रख दिया था। पोटाश बम के घातक केमिकल से बने हाथी के जीभ के घाव भरने का नाम नहीं ले रहा था। लगातार उपचार के बावजूद जीभ और गले के एक हिस्से में इन्फेक्शन बढ़ रहा था। जिसके चलते शावक ने भोजन त्याग दिया था।

सर्वहित की उपयोगिता से सिद्ध होती है निर्माण कार्य की प्राथमिकता - रंजना साहू

धमतरी(विश्व परिवार)। महिमा सागर वार्ड धमतरी शीतला माता मंदिर परिसर में आयोजित लोकार्पण कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के रूप में भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व विधायक श्रीमती रंजना डीपेंद्र साहू शामिल होकर समाज जनो के साथ नव निर्मित किचन शेड निर्माण कार्य का लोकार्पण किया। उपस्थित समाज जनो को बधाई देते हुए सामाजिक संघठन को मजबूत बनाने के साथ जन सरोकार से जुड़ी विषयो में शासन प्रशासन के साथ सहभागिता निभाने की बात कहते हुए श्रीमती रंजना साहू ने कहा कि समाज की एकता समाज की मजबूती को दर्शाता है, इसलिए एकजुट होकर समाज को आगे बढ़ाने के लिए सामाजिक पदाधिकारीयों का सहयोग करते हुए आगे बढ़े। निर्माण कार्य की प्राथमिकता तभी सिद्ध होती है जब यह सर्वहित के लिए उपयोगी हो इसके रंगरोहन व रखरखाव को ध्यान दें और इस निर्माण कार्य को सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक सहित अन्य कार्यक्रम के उपयोगिता में लाए। सभी को आत्मनिर्भर बन कर समाजजनों को एकसूत्र में बंध कर समाज के चहुमुखी विकास के लिए मिलकर काम करने की बात श्रीमती साहू ने कही। शहर मंडल अध्यक्ष विजय साहू ने निर्माण कार्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि संगठित समाज ही विकास की राह पर आगे बढ़ता है समाज के बुजुर्गों के मार्गदर्शन में युवाओं को समाज उत्थान के लिए कार्य करने की जरूरत है।

जिला चिकित्सालय में सुदृढ़ हो रही स्वास्थ्य सुविधाएं

पिछले कुछ समय से बंद नसबंदी सुविधा पुनः शुरू

एक ही दिन में 8 महिलाओं की हुई सफल नसबंदी

गरियाबंद(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के सुशासन में गरियाबंद जिले में स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में लगातार सुधार के साथ ही स्वास्थ्य संस्थाओं में भी नई सुविधाओं में बढ़ोतरी हो रही है। साथ ही जिला अस्पताल में भी सुविधाएं बढ़ रही है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फिंगेश्वर में सोनोग्राफी सुविधा के साथ ही ओटी को अपडेट कर एफआरयू सेंटर के रूप में विकसित किया गया है। जिला चिकित्सालय के ओटी को भी नए उपकरणों और संसाधनों से सुसज्जित किया गया है। कलेक्टर श्री दीपक अग्रवाल के दिशानिर्देश एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ गार्गी यदु पाल के मार्गदर्शन में जिले स्वास्थ्य केंद्रों में लगातार सुविधाएं विकसित की जा रही है। इसी तारतम्य में जिला अस्पताल में पिछले कुछ समय से बंद नसबंदी सेवा पुन: प्रारंभ हो गई है। जनसंख्या नियंत्रण व परिवार कल्याण कार्यक्रम के तहत जिला चिकित्सालय गरियाबंद में दूरबीन पद्धति से 8 महिलाओं का सफल नसबंदी ऑपरेशन किया गया। इस दौरान जिले की मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जो स्वयं भी स्त्रीरोग विशेषज्ञ हैं वहां उपस्थित रही। गरियाबंद जिला चिकित्सालय में पदस्थ शल्य चिकित्सक डॉक्टर हरीश चौहान और डॉक्टर ए के हुमने द्वारा समय समय पर पुरुष नसबंदी ऑपरेशन कार्य किया जा रहा है । पिछले दिनों पुरुष नसबंदी पखवाड़ा के दौरान छुरा में 13, गरियाबंद में 7 तथा राजिम मे 9 ऑपरेशन सहित कुल 29 पुरुषों का सफल एनएसवीटी ऑपरेशन दोनों डॉक्टरों के द्वारा किया गया है। पिछले कुछ समय से जिले की परिवार नियोजन हेतु इच्छुक महिलाओं का नसबंदी ऑपरेशन विशेषज्ञ डॉक्टर की कमी के कारण नहीं हो पा रहा था। इस कारण जिले की महिलाओं को स्थाई रूप से परिवार नियोजन हेतु अधिक खर्चा में निजी अस्पतालो में अथवा अन्य जिलों या उड़ीसा राज्य में जाकर अपनी नसबंदी करानी पड़ती थी। मितानिनों ने भी जिले में महिला नसबंदी कराए जाने की मांग रखी थी । जिले में पुरुष नसबंदी की अपेक्षा महिला नसबंदी के प्रति अधिक रुझान देखने को मिलता है।

युवाओं को कला और संस्कृति के क्षेत्र में मिल रहा अवसर : विधायक रेणुका सिंह

एमसीबी(विश्व परिवार)। मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में जिला स्तरीय युवा उत्सव 2024 का आयोजन मनेंद्रगढ़ में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। यह आयोजन कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशन और खेल अधिकारी गोपाल सिंह के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भरतपुर-सोनहत विधानसभा क्षेत्र की विधायक और पूर्व केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह उपस्थित रहीं। उनके साथ जनपद पंचायत कोरिया की अध्यक्ष रेणुका सिंह, जिला अध्यक्ष अनिल केशरवानी, पूर्व जिला अध्यक्ष लखन लाल श्रीवास्तव और अन्य जनप्रतिनिधि तथा अधिकारी भी शामिल हुए। इस अवसर पर अपने संबोधन में विधायक रेणुका सिंह ने इस अवसर पर कहा कि यह युवा महोत्सव हमारी सांस्कृतिक विरासत और युवाओं की ऊर्जा का प्रतीक है। उन्होंने छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि को रेखांकित करते हुए युवाओं को इस मंच पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति देश का आधार है और उनकी ऊर्जा और नई सोच से ही भारत को विश्वगुरु बनाने का सपना साकार होगा। वही जनपद पंचायत अध्यक्ष रेणुका सिंह ने इस आयोजन को युवाओं की छिपी हुई प्रतिभा को सम्मान देने का उत्कृष्ट मंच बताया। उन्होंने लोक नृत्य जैसे सुआ, ददरिया और कर्मा को संरक्षित करने और इसके माध्यम से छत्तीसगढ़ की संस्कृति को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया। पूर्व जिला अध्यक्ष लखन लाल श्रीवास्तव ने युवाओं को देश का भविष्य बताते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस जिला स्तरीय युवा महोत्सव कार्यक्रम के दौरान सामूहिक लोकनृत्य, व्यक्तिगत लोकनृत्य, सामूहिक गीत, कहानी लेखन, चित्रकला जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। सामूहिक लोकगीत की प्रस्तुति ग्राम मनेन्द्रगढ़ के हरीदास एवं उनके साथियों ने दी। सामूहिक लोकनृत्य में ग्राम खड़गवां की रोशनी एवं उनकी टीम प्रथम स्थान पर रहीं। व्यक्तिगत लोकगीत में खड़गवां के विवेक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कहानी लेखन प्रतियोगिता में मनेन्द्रगढ़ की अनामिका मिश्रा प्रथम, मानसी अग्रवाल द्वितीय और अदिति अग्रवाल तृतीय स्थान पर रहीं। चित्रकला में कृष्णा प्रथम और इशिका सिंह द्वितीय स्थान पर रहीं। वक्तृत्व कला में जनकपुर की रीना सिंह ने प्रथम और मनेन्द्रगढ़ की जया शर्मा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कविता पाठ में खड़गवां के मनोज कुमार प्रथम और मनेन्द्रगढ़ के सतीश पाण्डेय द्वितीय स्थान पर रहे। विज्ञान मेले में मनेन्द्रगढ़ के जय लहरे एवं उनके साथियों ने अपनी प्रस्तुति दी। हस्तशिल्प में शुभम एवं उनकी टीम ने मनेन्द्रगढ़ का प्रतिनिधित्व किया। कृषि उत्पादन में मनेन्द्रगढ़ के विष्णु प्रसाद द्विवेदी ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। टेक्सटाइल क्षेत्र में भरतपुर की अस्मिता और वंदना सिंह ने अपनी कला का प्रदर्शन किया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर मंगलवार 10 दिसंबर 2024

व्यापार समाचार

महंगाई, आईआईपी और वैश्विक आर्थिक आंकड़ों से अगले हफ्ते तय होगा बाजार का रुख

नई दिल्ली। आने वाले हफ्ते में भारतीय शेयर बाजार की चाल थोक और खुदरा महंगाई के आंकड़े, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी), कच्चे तेल की कीमत, डॉलर-रुपये में कारोबार और वैश्विक स्तर पर आने वाले आर्थिक डेटा पर निर्भर करेगी। यह जानकारी एक्सपर्ट्स द्वारा रविवार को दी गई। बीता हफ्ता भारतीय शेयर बाजार के लिए काफी शानदार रहा। यह लगातार तीसरा हफ्ता था, जब शेयर बाजार तेजी के साथ बंद हुआ। निफ्टी 2.27 प्रतिशत या 546 अंक की बढ़त के साथ 24,677 और सेंसेक्स 2.39 प्रतिशत या 1,906 अंक की तेजी के साथ 81,709 पर बंद हुआ। शेयर बाजार में तेजी की वजह भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा सकरात्मक कमेंट्री को माना जा रहा है। केंद्रीय बैंक ने दिसंबर की मौद्रिक नीति में कैश रिजर्व रेश्यो (सीआरआर) को 0.50 प्रतिशत घटाने का ऐलान किया है। इससे बैंकिंग सिस्टम में तरलता बढ़ेगी। इसके अलावा आरबीआई द्वारा मजबूत मांग और इंडस्ट्रियल ग्रोथ को लेकर भी भरोसा जताया गया। इसके अतिरिक्त विदेशी निवेशकों द्वारा शेयर बाजार में खरीदारी करना भी तेजी की एक बड़ी वजह है। पिछले हफ्ते विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा भारतीय बाजारों में करीब 12,000 करोड़ रुपये और घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) द्वारा करीब 1,800 करोड़ रुपये की खरीदारी की गई है। मास्टर ट्रस्ट ग्रुप में निदेशक पुनित सिंघानिया ने कहा कि निफ्टी लगातार 5 हफ्तों तक 21 दिनों के मूविंग एवरेज के नीचे कारोबार करने के बाद दोबारा से इसके ऊपर आ गया है, जो कि तेजी को दिखाता है। निफ्टी के लिए 24,250 एक मजबूत सपोर्ट है। 24,250 के स्टॉपलॉस के साथ 24,500 के करीब खरीदारी करना एक सही फैसला होगा। आगे कहा कि ऊपरी स्तरों पर 25,000 एक अहम रुकावट का स्तर होगा। अगर निफ्टी में 24,250 का स्तर टूटता है तो 23,900 के स्तर भी आ सकते हैं। स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड में वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक, प्रवेश गौड़ ने कहा कि बैंक निफ्टी के लिए 53,800 से लेकर 54,000 एक रुकावट का स्तर है। अगर यह 54,000 के ऊपर निकलता है, तो अगला रुकावट का स्तर 54,500 से लेकर 55,000 होगा। गिरावट की स्थिति में 52,600 से लेकर 52,300 एक अहम स्पोर्ट जोन है। आगे कहा कि डेरिवेटिव बाजार में एफआईआई इंडेक्स फ्यूचर्स में 55 प्रतिशत की शॉर्ट पोजीशन रखते हैं, जबकि पुट-कॉल अनुपात (पीसीआर) 1.03 है, जो शॉर्ट-कवरिंग रैली की संभावना को दर्शाता है। ऐतिहासिक रूप से, दिसंबर बाजार के लिए एक अनुकूल महीना रहा है, जो सकारात्मक चाल के लिए सहायक पृष्ठभूमि प्रदान कर सकता है।

एयरटेल ने जारी की स्पैम रिपोर्ट, स्पैम सॉल्यूशन के लॉन्च के बाद दिखे नेटवर्क ट्रेंड का किया विश्लेषण

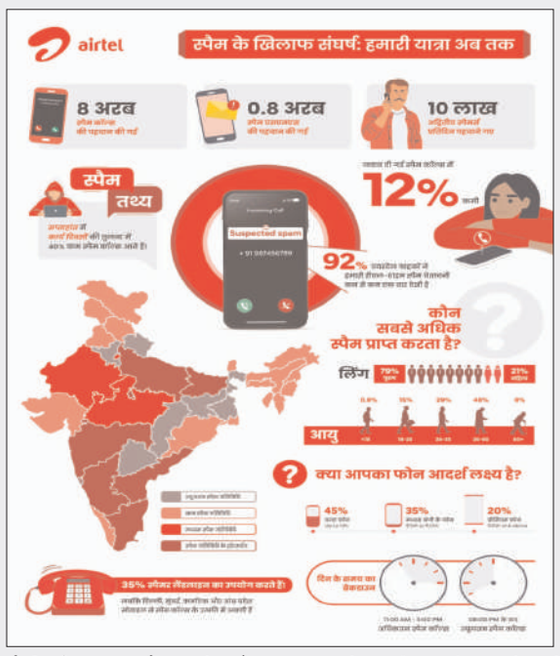

नई दिल्ली: भारत के पहले स्पैम-फाइटिंग नेटवर्क भारती एयरटेल ने अपने एआई-संचालित स्पैम-फाइटिंग सॉल्यूशन को लॉन्च करने के ढाई महीने के भीतर ही 8 अरब स्पैम कॉल और 0.8 अरब स्पैम एसएमएस को चिह्नित किया है। इस एडवांस्ड एल्गोरिदम की मदद से, एआई-संचालित नेटवर्क ने हर दिन लगभग एक मिलियन स्पैमर्स की पहचान सफ्लतापूर्वक की है। पिछले ढाई महीनों में कंपनी ने लगभग 25.2 करोड़ यूनिक कस्टमर्स को इन स्पैम कॉल्स के बारे में सतर्क किया है और देखा गया है कि ऐसे कॉल्स का जवाब देने वाले ग्राहकों की संख्या में 12% की कमी आई है। एयरटेल नेटवर्क पर सभी कॉल्स में से 6% को स्पैम कॉल्स के रूप में पहचाना गया है, जबकि कुल एसएमएस का 2% भी स्पैम के रूप में चिन्हित किया गया है। दिलचस्प तथ्य यह है कि 35% स्पैमर्स ने लैंडलाइन टेलीफोन का इस्तेमाल किया है। दिल्ली के ग्राहकों को सबसे ज्यादा स्पैम कॉल प्राप्त हुए हैं, उसके बाद आंध्र प्रदेश और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्राहकों को। सबसे ज्यादा स्पैम कॉल दिल्ली से की गई, उसके बाद मुंबई और कर्नाटक से। एसएमएस के मामले में सबसे ज्यादा एसएमएस गुजरात से भेजे गए, फिर कोलकाता और उत्तर प्रदेश से। सबसे ज्यादा ग्राहक मुंबई, चेन्नई और गुजरात के निशाने पर रहे। रिपोर्ट में सामने आए ट्रेंड के मुताबिक, 76% स्पैम कॉल पुरुष ग्राहकों को की गई है। उम्र के आधार पर भी स्पैम कॉल की संख्या में अंतर देखा गया है।

36-60 आयु वर्ग के ग्राहकों को 48त्न स्पैम कॉल मिली है, जबकि 26-35 आयु वर्ग के ग्राहकों को 26त्न कॉल की गई। वरिष्ठ नागरिकों के पास केवल 8त्न स्पैम कॉल पहुंची है। कंपनी के विश्लेषण से स्पैम कॉल के समय का भी पता चला है। स्पैम कॉल सुबह 9 बजे से शुरू होती है और दिन चढ़ने के साथ इनकी संख्या बढ़ती जाती है। स्पैम कॉल की सबसे ज्यादा गतिविधि दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच होती है। इसके अलावा, सप्ताह के दिनों और सप्ताहांत में स्पैम कॉल की संख्या में बड़ा अंतर देखा गया है। रविवार को इन कॉल की संख्या लगभग 40त्न तक कम हो जाती है। यह भी एक ट्रेंड देखने को मिला कि खासकर 15,000 से 20,000 रुपये की कीमत वाले उपकरणों पर करीब 22त्न स्पैम कॉल आती है।

एडिलेड टेस्ट : प्लेयर ऑफ द मैच ट्रेविस हेड ने कहा- फिर से रन बनाकर अच्छा लगा

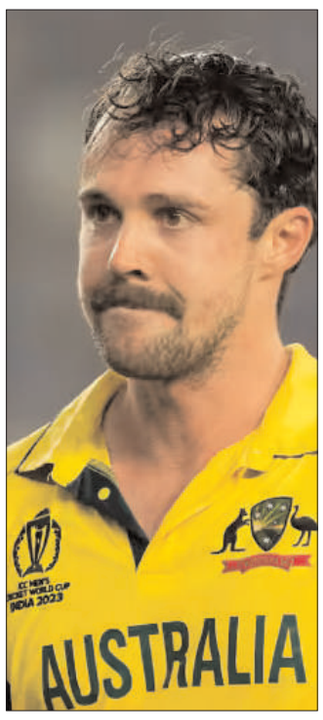

एडिलेड। ऑस्ट्रेलिया के बाएं हाथ के बल्लेबाज ट्रेविस हेड को भारत के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के दूसरे टेस्ट मैच में 140 रन की मैच जिताऊ पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। हेड ने कहा कि अपने घरेलू मैदान पर फिर से रन बनाना उनके लिए खुशी की बात थी। हेड ने अपनी तेजतर्रार बल्लेबाजी और आक्रामक शॉट्स से 141 गेंदों पर आठवां टेस्ट शतक जड़ा, जिसमें 17 चौके और 4 छक्के शामिल थे। उनकी इस पारी ने ऑस्ट्रेलिया को 152 रन की बढ़त दिलाई, जो टीम की दस विकेट से जीत में अहम साबित हुई। हेड ने कहा, रन बनाकर अच्छा लगा। पिछले हफ्ते भी मैं अच्छी फॉर्म में था और लगा कि मैं लय में हूं। हमारी टीम का ड्रेसिंग रूम बहुत अच्छा है, सभी एकजुट हैं, भले ही बाहर से कुछ और कहा जाए। हमें पता था कि अगर हम अच्छा प्रदर्शन करेंगे, तो जीत की संभावना बढ़ेगी। उन्होंने आगे कहा, पारी के दौरान मैंने सही मौके पहचाने और अपना खेल खेला। कल रात का सेशन भी शानदार था। कप्तान पैट कमिंस मुझे पूरा भरोसा देते हैं कि मैं अपनी मर्जी से खेलूं। दूसरे नए गेंद के खिलाफ तेजी से रन बनाने का यह अच्छा मौका था। मौसम काफी गर्म था और मुझे लगा कि नई गेंद से खेलना चुनौतीपूर्ण होगा। इसके अलावा, तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने एडिलेड टेस्ट में 8 विकेट लिए, जिसमें मैच की पहली ही गेंद पर यशस्वी जायसवाल का विकेट भी शामिल था। पहली पारी में 6 विकेट लेने वाले स्टार्क ने कहा कि पर्थ में मिली 295 रन की हार को वहीं छोड़कर एडिलेड में नए सिरे से खेलने का निर्णय सही साबित हुआ। स्टार्क ने कहा, यह हमारे लिए अच्छा हफ्ता रहा। हमने पहले टेस्ट के बाद सुधार किया और यह जीत सकारात्मक रही। बाहर काफी बातें हो रही थीं, लेकिन हमने पर्थ को वहीं छोड़ दिया। एडिलेड में अपने शानदार रिकॉर्ड के बारे में पूछे जाने पर स्टार्क ने कहा, इसका कोई खास कारण नहीं है। मेरी तैयारी हमेशा एक जैसी रहती है, बस यहां मैं थोड़ा फुलर लेंथ में गेंदबाजी करता हूं। पिंक बॉल सफेद गेंद की तरह बर्ताव करती है। हमारी बल्लेबाजी और गेंदबाजी आक्रामक रही, जिसका फायदा मिला। जब गेंद स्टंप्स पर लगती है तो अच्छा लगता है।

मौकों को नहीं भुना पाने का खामियाजा भुगतना पड़ा, हार के बाद रोहित शर्मा ने किया स्वीकार

एडिलेड टेस्ट

एडिलेड। भारतीय टेस्ट टीम के कप्तान रोहित शर्मा की पर्थ टेस्ट में गैरमौजूदगी के बाद वापसी अच्छी नहीं रही। एडिलेड ओवल में खेले गए डे-नाइट टेस्ट में भारत को ऑस्ट्रेलिया ने 10 विकेट से हरा दिया। रोहित ने इस मैच में छठे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए पहली पारी में तीन और दूसरी में छह रन बनाए। उनके नेतृत्व और गेंदबाजी में बदलावों पर सवाल उठे। उन्होंने खुद स्वीकार किया कि भारत ने कई मौके गंवाए, जो हार का कारण बने। मैच के बाद रोहित ने कहा, हमारे लिए यह हफ्ता निराशाजनक रहा। हमने उतना अच्छा नहीं खेला जितना जीत के लिए जरूरी था। ऑस्ट्रेलिया ने हमसे बेहतर प्रदर्शन किया। खेल के दौरान कई ऐसे मौके आए जिन्हें हम भुना नहीं सके और यही हार की वजह बनी। उन्होंने आगे कहा, पर्थ में जो हमने किया था वह खास था। यहां भी हम वही दोहराना चाहते थे, लेकिन हर टेस्ट मैच अलग चुनौती लाता है। हमें पता था कि गुलाबी गेंद के साथ यह मैच मुश्किल होगा। लेकिन जैसा मैंने कहा, ऑस्ट्रेलिया बेहतर खेली। पांच मैचों की सीरीज अब 1-1 की बराबरी पर है। रोहित ने कहा कि टीम 14 दिसंबर से शुरू हो रहे गाबा टेस्ट के लिए तैयार है। उन्होंने कहा, अगले मैच से पहले ज्यादा समय नहीं है। हमें पर्थ में किए गए अच्छे प्रदर्शन और पिछली बार गाबा में किए गए प्रदर्शन को याद रखना होगा। वहां की अच्छी यादें हैं। हर टेस्ट मैच की चुनौती को समझते हुए हमें अच्छी शुरुआत करनी होगी। वहीं, ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने तीसरे दिन सुबह के सत्र में 5 विकेट लेते हुए टीम को शानदार जीत दिलाई।

ड्यूरोप्लाई ने अपने वुड प्रोडक्ट्स पर दीमक और कीड़ों से जीवनभर के लिए सुरक्षा पेश की

नई दिल्ली: ड्यूरोप्लाई, जो भारत के अग्रणी और भरोसेमंद प्लाईवुड निर्माताओं में से एक है, ने अपने वुड प्रोडक्ट्स जैसे प्लाईवुड, वीनियर, दरवाजे और ब्लॉकबोर्ड पर दीमक और कीड़ों के संक्रमण से जीवनभर के लिए सुरक्षा की गारंटी की पेशकश की है। ड्यूरोप्लाई ने 2016 से ही यह अनूठी गारंटी देकर इंडस्ट्री में नई मिसाल कायम की थी। यह कंपनी अपने ग्राहकों की जरूरतों को समझते हुए ऐसे प्रोडक्ट बनाती है, जो सिर्फ मजबूत और टिकाऊ ही नहीं, बल्कि पीढ़ियों तक भरोसेमंद बने रहते हैं। यह लाइफ्टाइम गारंटी ड्यूरोप्लाई के उत्पादों की उच्च गुणवत्ता और स्थायित्व को सुनिश्चित करती है। साथ ही, यह घर के मालिकों, वास्तुकारों और इंटीरियर डिजाइनरों के बीच ड्यूरोप्लाई को एक भरोसेमंद ब्रांड के रूप में और अधिक मजबूती से स्थापित करती है। ड्यूरोप्लाई के एमडी और सीईओ, श्री अखिलेश चितलंगिया ने कहा, ‘‘हमने हमेशा अपने ग्राहकों के लिए ऐसी गुणवत्ता पेश करने पर जोर दिया है जो हर बार बेहतर हो। ड्यूरोप्लाई इंडस्ट्री में पहली ऐसी कंपनी है जिसने दीमक और कीट प्रूफ प्लाईवुड पर लाइफ्टाइम गारंटी देने का कदम उठाया। यह न केवल हमारी गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि ग्राहकों को स्थायित्व और भरोसे का अनुभव भी देता है। छह दशकों से अधिक के अनुभव के साथ, हम लगातार ऐसे उत्पाद और तकनीक लेकर आते हैं जो उद्योग के लिए बेंचमार्क बन जाते हैं। ड्यूरोप्लाई अपने उत्पादों को दीमक और कीटों से सुरक्षित बनाने के लिए आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करता है। कंपनी कोर ट्रीटमेंट और 5।ङ्क टेक्नोलॉजी के साथ ग्लू लाइन ट्रीटमेंट के जरिए अपने प्लाईवुड में सुरक्षा की अतिरिक्त परतें जोड़ती है। खास रसायनों से कोर ट्रीटमेंट न केवल सतह पर, बल्कि प्लाईवुड की हर परत के अंदर तक लागू होता है, जिससे दीमक या कीड़े अंदर प्रवेश नहीं कर पाते। ग्लू लाइन ट्रीटमेंट के साथ, यह प्रक्रिया और भी मजबूत हो जाती है।

यूपीआई की पहुंच बढ़ने से पहली बार लोन लेने वाले लोगों की संख्या में हो रहा इजाफा

नई दिल्ली। देश में यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) की पहुंच बढ़ने से पहली बार लोन लेने वाले लोगों की संख्या में इजाफा हो रहा है। यह जानकारी एक रिसर्च पेपर में दी गई। आईआईएम और आईएसबी के प्रोफेसर्स द्वारा तैयार किए गए पेपर में कहा गया कि 2016 में लॉन्च हुए यूपीआई से देश के फाइनेंशियल सेक्टर में बड़ा बदलाव लाया है। पिछले साल अक्टूबर तक इससे 30 करोड़ से ज्यादा लोग और 5 करोड़ से ज्यादा मर्चेंट्स इससे जुड़े हुए थे। भारत में होने वाले कुल रिटेल डिजिटल लेनदेन में से 75 प्रतिशत यूपीआई के माध्यम से किए जा रहे हैं। स्टडी में आगे कहा गया कि इस छोटी अवधि में यूपीआई ने देश के फाइनेंशियल सिस्टम पर बड़ा असर डाला है और इसका इस्तेमाल रेहड़ी-पटरी वालों से लेकर बड़े शॉपिंग मॉल में किया जा रहा है। पेपर के मुताबिक, यूपीआई के जरिए वंचित लोगों तक सेवाओं का विस्तार करने में मदद मिली है, जिसमें सबप्राइम और पहली बार औपचारिक लोन लेने वाले लोग भी शामिल है। पेपर में कहा गया,जिन इलाकों में यूपीआई की पहुंच काफी ज्यादा है। वहां पहली बार लोन लेने वाले लोगों की संख्या 4 प्रतिशत और सबप्राइम उधारकर्ताओं की संख्या में 8 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। इसके अतिरिक्त इन इलाकों में फिनटेक लोन का औसत साइज 27,778 रुपये है, जो कि ग्रामीण मासिक खर्च से करीब 7 गुणा ज्यादा है। लेखकों ने कहा कि यूपीआई की पहुंच के कारण फिनटेक लोन कंपनियों ने तेजी से विस्तार किया, जिससे उनके लोन की वॉल्यूम में 77 गुना की बढ़ोतरी हुई है और छोटे, वंचित उधारकर्ताओं को लोन देने के मामले में वे पारंपरिक बैंकों से कहीं आगे हैं। साथ ही कहा कि देश में यूपीआई को तेजी से अपनाने के पीछे एक बड़ा कारण किफायती इंटरनेट का होना है।लेखकों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि यूपीआई अपनाने से लोन वृद्धि में काफी बढ़त मिली है।

वी बिज़नेस पेश करते हैं इज़ी प्लस; कॉर्पोरेट पोस्ट-पेड यूज़र्स खरीद सकेंगे अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों के लिए अतिरिक्त सेवाएं

रायपुर। जाने-माने दूरसंचार सेवा प्रदाता वोडाफोन आइडिया की एंटरप्राइज़ शाखा वी बिज़नेस ने कॉर्पोरेट पोस्ट-पेड प्लान्स पर नए प्रपोज़िशन इज़ी प्लस का लॉन्च किया है, जिसके तहत सब्सक्राइबर्स मौजूदा कॉर्पोरेट प्लान्स पर अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों के लिए इंटरनेशनल रोमिंग, ओटीटी सब्सक्रिप्शन एवं अन्य सर्विसेज़ को सलेक्ट कर इन्हें खरीद सकते हैं। वी ऐप डाउनलोड कर वे इन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। अपनी तरह की अनूठी यह पेशकश कर्मचारियों के लिए अपनी ज़रूरत की सेवाओं को खरीदने के अनुभव को आसान बनाती है वे कॉर्पोरेट पोस्ट-पेड प्लान्स पर इन सेवाओं का खरीद कर बेजोड़ अनुभव पा सकते हैं। लॉन्च पर बात करते हुए रोएरिच कौशल, एक्ज़क्टिव वाईस प्रेज़ीडेन्ट, एंटरप्राइज़ेज़ मोबिलिटी बिज़नेस एण्ड मार्केटिंग ने कहा, ‘‘इज़ी प्लस के साथ वी बिज़नेस, कर्मचारियों के लिए कॉर्पोरेट पोस्टपेड प्लान के अनुभव को बदल देना चाहता है, जहां वे अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुसार सर्विसेज़ को सलेक्ट कर इन्हें खरीद सकते हैं। आज की कनेक्टेड दुनिया में कर्मचारी उम्मीद करते हैं कि वे आसानी से इंटरनेशनल रोमिंग, ओटीटी सब्सक्रिप्शन, डेटा पैक का अनुभव पा सकें और इसके लिए उन्हें कई मोबाइल नंबर रखने या अफ्रूवल्स की परेशानी न हो।’ ‘यह प्रोपोज़िशन आज के कर्मचारियों को सुविधा प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हमें उम्मीद है कि छुट्टियों के आगामी सीज़न में उपभोक्ता इज़ी प्लस के ज़रिए इंटरनेशनल रोमिंग का लाभ उठा सकेंगे और अपने कॉर्पोरेट प्लास पर अतिरिक्त सुविधा का आनंद उठा सकेंगे।’

शब्द सामर्थ्य -260

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान 4. मवाद, पीब (अं) 6. जाति 7. हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना, थपकना 9. कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.) 11. किरण 12. छौंक, तड़का 13. दुखदायी, दर्दनाक 15. विवाद, कहासुनी, तकरार 18. समूह, दल, समुदाय 19. दण्ड 20. काजल 22. अनाथ, निराश्रित, यतीम 24. दुख, शोक 25. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि।

ऊपर से नीचे
1. विचित्र, अद्भूत 2. अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना 3. वचन, वाणी 4. गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो 5. मुलायम सिंह की पार्टी का संक्षिप्त नाम 8. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध देवर्षि 10. कार्यावली, करस्तानी, प्रशंसनीय कार्य 13. दासी, नौकरानी, बांदी, गुलाम स्त्री 14. प्रवृत्त करने वाला, प्रेरित करने वाला, आविष्कारक 16. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर 17. सामान (उ.) 21. संसार, दुनिया 22. समय, चमेली की जाति का एक पौधा और फूल 23. पराजित, परास्त।

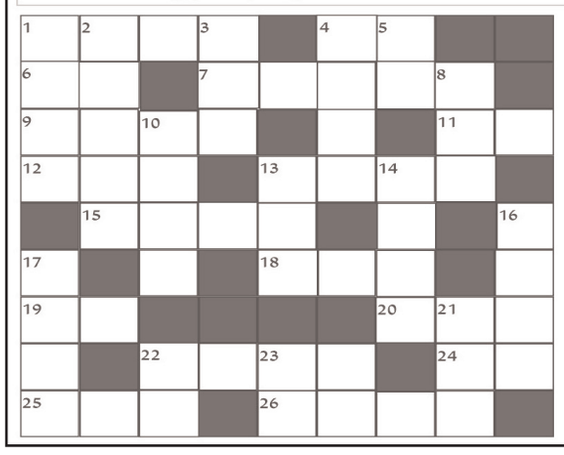

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 259 का हल

दि	क्क	त		आ	सा	न		आ
ल		मी		ख		सी	ख	ना
	म	ज	बू	र		ह		जा
स	र्द			का		त	रा	ना
र				र	वि		ह	
प	ह	ना	ना		ना	रा	ज	
ट			क	शि	श		नी	ला
	र			का		रा		य
खा	ति	र	दा	री		त	क्ष	क

सू- दोकू क्र. 260

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.259 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, मंगलवार 10 दिसम्बर 2024

ट्रैक्टर मैकेनिक कोर्स करने वालों को मिला रोजगार

रायपुर (विसं)। लाइवलीहुड कॉलेज जोरा में महिंद्रा एन्ड महिंद्रा लिमिटेड के द्वारा ट्रैक्टर मैकेनिक कोर्स में प्रशिक्षण हेतु नवीन तकनीक से लैब स्थापित किया गया है। जहां महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा कौशल विकास योजना अंतर्गत ट्रैक्टर मैकेनिक कोर्स में कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। प्रशिक्षित प्रथम बैच के सभी हितग्राहियों को प्लेसमेंट कैंप आयोजित कर महिंद्रा ट्रैक्टर डीलरशिप एवं प्लांट में रोजगार प्रदान किया गया। इस कोर्स के लिए जिले में निवासरत 18 से 45 वर्ष के इच्छुक हितग्राही आवेदन जमा कर सकते है।

संक्षिप्त समाचार

रायपुर प्रेस क्लब में आयुष्मान कार्ड बनाने 11 दिसंबर को शिविर का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर प्रेस क्लब में बुधवार, 11 दिसंबर को प्रेस क्लब सदस्यों, पत्रकारों और उनके परिजनों के लिए आयुष्मान कार्ड बनाने शिविर का आयोजन किया गया है। आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए 70 या 70 वर्ष से अधिक उम्र के पत्रकारों और उनके परिजनों को केवल आधार कार्ड लेकर शिविर में आना होगा। शिविर में न आ पाने की स्थिति में किसी परिजन या परिचित के हाथों आधार कार्ड की छायाप्रति, एक पासपोर्ट साइज फ़ोटो के साथ शिविर में भेजना होगा। हालांकि मोबाइल नम्बर उन्हीं का लगेगा, जिसमें ओटीपी आएगा। 70 वर्ष से कम उम्र के प्रेस क्लब सदस्य और परिजनों को आधार कार्ड की छाया प्रति और राशन कार्ड अनिवार्य रूप से लेकर आना होगा। प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर ने बताया कि यह शिविर सिर्फ प्रेस क्लब सदस्यों, पत्रकारों और उनके परिजनों के लिए है। अन्य कोई व्यक्ति शिविर में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर, महासचिव डॉ. वैभव शिव पांडेय, उपाध्यक्ष संदीप शुक्ला, कोषाध्यक्ष रमन हलवाई व संयुक्त सचिव तृप्ति सोनी और अरविंद सोनवानी ने सभी सदस्यों से इस शिविर का अधिक से अधिक संख्या में लाभ उठाने की अपील की है।

भारतीय भाषा उत्सव 11 दिसंबर को होगा आयोजित

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रकवि सुब्रमण्यम भारती की जयंती 11 दिसंबर को भारतीय भाषा उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय एवं सरस्वती शिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित उत्सव के दौरान भारतीय भाषा और उनमें एकात्मता विषय पर व्याख्यान होगा। विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे वहीं प्रसिद्ध अस्थि रोग विशेषज्ञ एवं विचारक डॉक्टर पूर्णेन्दु सक्सेना मुख्य वक्ता के तौर पर अपने विचार रखेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर सच्चिदानंद शुक्ल करेंगे। आयोजन समिति के संयोजक मोहन पवार ने बताया कि उत्सव के दौरान विभिन्न सामाजिक संगठनों के सांस्कृतिक दलों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी जाएगी। ज्ञातव्य हो कि केंद्र सरकार ने राष्ट्रकवि सुब्रमण्यम भारती की जयंती को भारतीय भाषा दिवस के रूप में घोषित किया है। इस उपलक्ष में देश भर में शैक्षणिक संस्थाओं समेत अन्य प्रतिष्ठानों में भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न आयोजन किए जाते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में विशेष तौर पर भारतीय भाषाओं को अधिक से अधिक शिक्षा का माध्यम बनाए जाने के साथ ही आम व्यवहार में भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान का भाव विकसित करने पर बल दिया गया है।

राजेश मूणत ने रायपुर पश्चिम में लिख दी विकास की इबारत, महज एक साल में 139 करोड़ के काम

विधायक राजेश मूणत का विकास अभियान- अगले साल आएंगे बड़े प्रोजेक्ट, रायपुर पश्चिम में शुरू होंगे बड़े प्रोजेक्ट, वार्डों दिखेगा बड़ा बदलाव

रायपुर पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के 20 वार्डों में सालभर में 139 करोड़ के काम, गुढ़ियारी कालेज, स्कूल अपग्रेडेशन और फ्लाईओवर भी

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर पश्चिम से दिग्गज भाजपा विधायक तथा तीन बार के मंत्री रहे राजेश मूणत ने चौथी बार विधायक बनने के बाद 4 दिसंबर 2023 से अपने विधानसभा क्षेत्र में वार्डों की जरूरत का सर्वे शुरू किया और सिर्फ एक साल में सभी वार्डों में विकास की नई इबारत लिख दी है। विकास के विजन के साथ राजेश मूणत ने अपने क्षेत्र के वार्डों में इतने काम शुरू करवाए हैं कि कई जगह सूरत बदलती नजर आ रही है। उन्होंने अपनी विधायक निधि के अलावा सीएम विष्णुदेव साय तथा पीडब्लूडी मंत्री अरुण साव के जरिए वार्डों में सालभर में 139 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। इस बार उन्होंने राजधानी में सरकारी स्कूलों और कालेजों के अपग्रेडेशन और निर्माण का सबसे बड़ा अभियान छेड़ रखा है। कई सरकारी स्कूलों की सूरत बदल रही और उनमें प्राइवेट जैसी सुविधाएं या तो उपलब्ध हो रही हैं, या जल्दी होने वाली हैं। गुढ़ियारी में पहले सरकारी कालेज की आधारशिला रखने के साथ राजेश मूणत ने युवाओं को बड़ी सुविधा देने पर अमल शुरू कर दिया है। हीरापुर और जरवाय में ओवरपास आसपास के लाखों लोगों को सुरक्षित रास्ते प्रदान करेगा। तकरीबन हर वार्ड में वरिष्ठ विधायक मूणत प्राइमरी से हायर सेकेंडरी तक के सरकारी स्कूलों में छात्रों के लिए ऐसी सुविधाएं जुटा रहे हैं, ताकि छात्रों को स्कूल आने में अच्छा फील हो। विधायक निधि तथा अन्य मदों से राजेश मूणत ने वार्डों में सामुदायिक भवनों और आंगनबाड़ी भवनों की जैसे झड़ी लगा दी है। कोई वार्ड ऐसा नहीं है, जहां इनमें से एक न एक भवन का भूमिपूजन होकर काम न शुरू हुआ है। रेलवे स्टेशन से रामनगर तक नई फोरलेन रोड निकलवाकर मूणत आसपास के लाखों लोगों को एक ऐसी सुविधा देने जा रहे हैं, जिन्हें उनके पूर्व के क कार्यों की तरह बरसों तक याद किया जाएगा।

कई वार्डों में अगले साल ज्यादा बड़े प्रोजेक्ट आएंगे- वीर सावरकर नगर में 70.5 करोड़ रुपए: इनमें हीरापुर में फ्लाईओवर, जरवाय में ओवरपास समेत विकास कार्य। नेताजी बाजारी वार्ड में पौने 4 करोड़ रुपए: इनमें गुढ़ियारी चौक से रामनगर तक डामरीकरण, सड़कें और भवन। वीर शिवाजी वार्ड में 1 करोड़ 39 लाख रुपए: इनमें आंगनबाड़ी, मुक्तिधाम सौंदर्यीकरण, सामुदायिक भवन, सड़कें। ठक्कर बापा वार्ड में 1 करोड़ 55 लाख रुपए: इनमें बोर, कार्यालय भवन, स्कूल की सड़क, जिन तथा आंगनबड़ी। तिलक वार्ड में 1 करोड़ 22 लाख रुपए: इनमें स्मार्ट शौचालय, डामर तथा कंक्रीट सड़कें और ड्रेन की कवरिंग। एपीजे कलाम वार्ड में 63 लाख रुपए: इनमें आदर्श आंगनबाड़ी, पाइन लाइनें, सड़कें और कार्यालय भवन निर्माण। परमहंस वार्ड में 75 लाख रुपए: इनमें सामुदायिक भवन, आंगनबाड़ी, स्कूल जीर्णोद्धार और गार्डन अपग्रेडेशन। भगत सिंह वार्ड में 1 करोड़ 30 लाख रुपए: दो उद्यानों का निर्माण, रंगमंच, ओपन जिम तथा सड़कें और नालियां। ईश्वरीचरण वार्ड में 1 करोड़ 24 लाख रुपए: इनमें सामुदायिक भवन, आंगनबाड़ी, स्कूल, रोड और सौंदर्याकरण। बख्शी वार्ड में 1 करोड़ 10 लाख रुपए: इनमें सामुदायिक भवन, कार्यालय भवन, स्कूल भवन और आंगनबाड़ी। सरदार पटेल वार्ड में पौने 4 करोड़ रुपए: मिडिल स्कूल अपग्रेडेशन, तालाब समेत कई शेड, सड़कें, कार्यालय। संत रामदास वार्ड में 1 करोड़ 21 लाख रुपए: सामुदायिक भवन, आंगनबड़ी, कई जगह शेड, चौक सौंदर्यीकरण। भामाशाह वार्ड में 27 करोड़ 32 लाख रुपए: शुक्रवारी बाजार से प्लेटफार्म 8 तक 26 करोड़ से फोरलेन रोड, अन्य। तात्यापारा वार्ड में 50 लाख रुपए- इनमें प्राइमरी स्कूल मरम्मत, मंच निर्माण, ड्रेन कवर, सीसी रोड, आरसीसी कवर। चूड़ामणि वार्ड में 1 करोड़ 91 लाख रुपए: इनमें सामुदायिक भवन, ओपन जिम, रामकुंड स्कूल में टायलेट, सड़कें। आत्मानंद वार्ड में 6 करोड़ 78 लाख रुपए: इनमें आदर्श आंगनबाड़ी, स्कूल में शेड, स्कूल मरम्मत, सड़कें-नालियां। प्यारेलाल वार्ड में 90 लाख रुपए: डंगनिया स्कूल में रोड व स्टैंड, सामुदायिक भवन, कार्यालय, तालाब सौंदर्यीकरण। डीडीनगर वार्ड में 3 करोड़ 79 लाख रुपए: विद्यापति गार्डन, रोहिणीपुरम तालाब, केवी में वालीबाल कोर्ट, सड़कें। सप्रे वार्ड में 5 करोड़ 4 लाख रुपए: महादेवघाट में शौचालय, रायपुरा में दो रंगमंच, सामुदायिक भवन, कई सड़कें। रविदास वार्ड में 4 करोड़ 31 लाख रुपए: सरोना में पौने 3 करोड़ से सड़कें, 4 स्कूलों का अपग्रेडेशन, रंगमंच, जिम।

पश्चिम को सुंदर-सुविधाजनक बनाना लक्ष्य : राजेश मूणत

तीन बार के मंत्री रह चुके राजेश मूणत ने कहा कि अपने पूर्व के कार्यकाल में रायपुर पश्चिम के वार्डों की दशा ठीक करने के लिए मैंने कुछ प्रयास किए थे। रायपुरा से गुढ़ियारी होकर खमतराई तक के 20 वार्डों में इनमें से किसी न किसी कार्य की जब राजधानी में चर्चा होती है, तब लगता है कि मैंने अपने क्षेत्र के आम लोगों के प्रति कर्तव्य के निर्वहन में सजगता से काम लिया है। चौथे कार्यकाल में मैंने पहले ही तय कर लिया था कि पूरे क्षेत्र के सरकारी स्कूल-कालेजों को ऐसा स्वरूप दिया जाएगा कि इनमें छात्रों को प्राइवेट स्कूल जैसी सुविधा उपलब्ध करवा सकूं। इस कार्य में सीएम साय का काफी सहयोग मिल रहा है और स्कूलों की बदलती तस्वीर संतोष दे रही है। पुल-पुलिया, सड़कें तथा इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े कार्य जरूरत के आधार पर प्राथमिकता से किए जा रहे हैं और यह क्रम चलेगा। राजेश मूणत ने कहा कि रायपुर पश्चिम के वार्डों में विकास का सिलसिला तो अभी शुरू हुआ है। यह पहला ही साल है, आने वाले वर्षों में इस विधानसभा क्षेत्र में हुए कार्यों को लोग देखने आएं, यह प्रयास सतत चलेगा।

पॉवर कंपनीज़ बैडमिंटन स्पर्धा में रायपुर का दबदबा, अंतर क्षेत्रीय विद्युत बैडमिंटन प्रतियोगिता का समापन

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पावर कंपनीज की अंतरक्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में रायपुर का दबदबा रहा। टीम इवेंट में 12 सालों के चैंपियन रही कोरबा वेस्ट की टीम को रायपुर क्षेत्रीय टीम ने शिकस्त देकर विजेता का खिताब हासिल किया। महिला एवं पुरुष के एकल व युगल मुकाबले में रायपुर सेंट्रल टीम ने बेहतर प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता के समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रबंध निदेशक (वितरण) श्री भीमसिंह कंवर थे। उन्होंने कहा कि खेल के माध्यम में विद्युतकर्मियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। हमारे विद्युतकर्मी विद्युत आपूर्ति की निर्बाध सेवा के साथ खेल विधि में भी दक्षता साबित कर रहे हैं, यह गौरव की बात है। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक सर्वश्री एमएस चौहान, केएस मनोठिया, जेएस नेताम, डीके तुली विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रबंध निदेशक ने विजयी प्रतिभागियों को ट्राफी व मेडल देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर बैडमिंटन खिलाड़ी व कार्यपालक निदेशक सिविल श्री डीके तुली को लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान प्रदान किया गया। तीन दिन तक चले बैडमिंटन प्रतियोगिता के टीम इवेंट में रायपुर क्षेत्र विजेता रहा, अतिथियों ने इस टीम के खिलाड़ी सर्वश्री योहन नायक, राजेश ठाकुर, दिलेश्वर ठाकुर, गिरीश कुमार व नवीन एक्का को विजेता ट्राफी प्रदान की। उपविजेता टीम कोरबा वेस्ट के खिलाड़ी सर्वश्री अविनेश पाठक, सीमांत मिंज, एम जोशी, नरेंद्र उइके एवं गौरव गुप्ता को भी ट्राफी व मेडल प्रदान किया गया। महिला एकल में विजेता संध्या रानी कोरबा पूर्व एवं उपविजेता झरना लता साहू रायपुर क्षेत्र रहीं। महिला युगल में रायपुर सेंट्रल की जुवेना गोम्स, सरोज डिहरी विजेता एवं कोरबा पूर्व की संध्यारानी व श्रद्धा पिल्लई उपविजेता रहीं।

पुरूष एकल मुकाबले में कोरबा पश्चिम के अनिवेश पाठक विजेता एवं रायपुर सेंट्रल के हितेंद्र मार्कंडेय उपविजेता रहे। पुरूष युगल मुकाबले में विजेता डी बाखला मड़वा व ऐश्वर्य पाठक रायपुर सेंट्रल रहे। उपविजेता कोरबा पश्चिम के अविनेश पाठक व नरेंद्र उइके रहे। इसी तरह वेटरन एकल (45 वर्ष से अधिक) में रायपुर सेंट्रल के संजय वैद्य विजेता एवं बिलासपुर के योगेश पटेल उपविजेता रहे। वेटरन युगल में रायपुर सेंट्रल के संजय अग्रवाल व संजय वैद्य विजेता तथा बिलासपुर के मधुप पटेल व योगेश पटेल उपविजेता रहे। मंच संचालन प्रकाशन अधिकारी श्री गोविन्द पटेल ने किया एवं आभार प्रदर्शन क्रीड़ा सचिव श्री विनय चंद्राकर ने किया। अखिल भारतीय बैडमिंटन प्रतियोगिता के खिलाड़ियों के चयन के लिये केंद्रीय पर्यवेक्षक ओंकार चंद्राकर रहे। अखिल भारतीय प्रतियोगिता के लिये अविनेश पाठक, हितेंद्र मार्कंडेय, धनेश्वर राम भाकला, सीमांत मिंज, ऐश्वर्य पाठक, योहान नायक, राजेश ठाकुर, नरेंद्र उईके एवं महिला खिलाड़ी संध्या रानी, झरना साहू, जुवेना गोम्स, गायत्री दीवान, कृतिका शर्मा व सरोज धिरही का चयन किया गया है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में पुनरुत्पादक ब्रेकिंग द्वारा प्रति माह ट्रैक्शन बिजली बिल में प्रति माह औसतन 5 करोड़ रुपए की होती है बचत

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के पास 13 WAP7 और 512 WAG9 लोकोमोटिव हैं, जिनमें से सभी में पुनरुत्पादक ब्रेकिंग सिस्टम हैं। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे लोको द्वारा प्रति माह औसतन 8376961 यूनिटें पुनर्जीवित की जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप ट्रैक्शन बिजली बिल में प्रति माह औसतन 5 करोड़ रुपये की बचत होती है।

पुनरुत्पादक ब्रेकिंग (Regenerative Braking) भारतीय रेलवे के आधुनिक तीन-चरणीय विद्युत लोकोमोटिव्स और मेमू ट्रेनों में उपयोग की जाने वाली एक क्रांतिकारी तकनीक है। पारंपरिक ब्रेकिंग सिस्टम, जैसे कास्ट आयरन या कंपोज़िट ब्रेक ब्लॉक्स, घर्षण के माध्यम से गतिक ऊर्जा को गर्मी में परिवर्तित करते हैं और इसे बर्बाद कर देते हैं। इसके विपरीत, पुनरुत्पादक ब्रेकिंग इस ऊर्जा को पुन: प्राप्त करके विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करती है। पारंपरिक ब्रेकिंग प्रणाली, हालांकि, आपात स्थितियों या धीमी गति में तत्काल और सटीक रुकने की आवश्यकता को पूरा करने के लिए आवश्यक बनी रहती है। लेकिन इन प्रणालियों की सबसे बड़ी कमी यह है कि इनसे ऊर्जा अपरिवर्तनीय रूप से गर्मी के रूप में खो जाती है, जिसे पुनरुत्पादक ब्रेकिंग प्रभावी ढंग से संबोधित करती है।

पारंपरिक ब्रेकिंग, विशेषकर इलेक्ट्रिकल डायनेमिक ब्रेकिंग, प्रतिरोधकों के माध्यम से ऊर्जा को गर्मी के रूप में समाप्त कर देती है और ऊर्जा पुनर्प्राप्ति की कोई संभावना नहीं देती। पुनरुत्पादक ब्रेकिंग इस प्रक्रिया को क्रांतिकारी बनाती है, क्योंकि यह लोकोमोटिव की गतिक ऊर्जा को धीमी गति के दौरान विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करती है। यह ऊर्जा फिर ओवरहेड कैटनरी सिस्टम में भेजी जाती है, जहां इसका उपयोग अन्य ट्रेनों को शक्ति प्रदान करने या ग्रिड में एकीकृत करने के लिए किया जा सकता है। इस तकनीक ने भारतीय रेलवे को लगभग 15त्न ऊर्जा बचत प्राप्त करने में सक्षम बनाया है, जो इसके आर्थिक और पर्यावरणीय योगदान को दर्शाता है।

पुनरुत्पादक ब्रेकिंग की प्रक्रिया ट्रैक्शन मोटर्स पर निर्भर करती है, जो धीमी गति के दौरान जनरेटर के रूप में कार्य करती हैं। पहियों की घूर्णन ऊर्जा को उन्नत पावर इलेक्ट्रॉनिक्स के माध्यम से विद्युत ऊर्जा में बदला जाता है, जो ऊर्जा के हस्तांतरण की प्रक्रिया को विनियमित करती है। पारंपरिक डीसी सीरीज़ मोटर्स से तीन-चरणीय एसिंक्रोनस मोटर्स में स्थानांतरण इस तकनीक को सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिष्कृत नियंत्रण प्रणालियाँ ऊर्जा पुनर्प्राप्ति की स्थिरता और दक्षता सुनिश्चित करती हैं, जिससे इसे ग्रिड या ऑनबोर्ड ऊर्जा भंडारण प्रणाली के साथ प्रभावी रूप से एकीकृत किया जा सकता है। पुनरुत्पादक ब्रेकिंग कई लाभ प्रदान करती है। यह गतिक ऊर्जा को उपयोगी विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करके ऊर्जा खपत को कम करती है, जिससे संचालन लागत और बाहरी ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम होती है। यह यांत्रिक ब्रेकिंग घटकों पर घिसावट को भी कम करती है, उनकी सेवा अवधि बढ़ाती है और रखरखाव लागत को घटाती है। इसके अतिरिक्त, यह कार्बन उत्सर्जन को कम करके और ग्रिड की स्थिरता को बढ़ावा देकर पर्यावरणीय स्थिरता का समर्थन करती है। ऊर्जा को पुन: प्राप्त करके और उपयोग करके, यह रेल नेटवर्क में बिजली की आपूर्ति और मांग के संतुलन में भी योगदान करती है।

पुनरुत्पादक और पारंपरिक ब्रेकिंग सिस्टम का संयोजन दक्षता और विश्वसनीयता के बीच संतुलन सुनिश्चित करता है। जहां पुनरुत्पादक ब्रेकिंग ऊर्जा पुनर्प्राप्ति और स्थिरता में उत्कृष्ट है, वहीं पारंपरिक प्रणाली सुरक्षा-आधारित परिदृश्यों में आवश्यक मजबूती प्रदान करती है। यह दोहरी दृष्टिकोण भारतीय रेलवे की नवाचार, ऊर्जा दक्षता और स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता को उजागर करता है, जो रेल परिवहन में हरित और अधिक लागत-कुशल भविष्य की दिशा में मार्ग प्रशस्त करता है। जैसे-जैसे यह तकनीक विकसित हो रही है, ऊर्जा भंडारण और ग्रिड अनुकूलता में और सुधार की उम्मीद है, जो इस परिवर्तनकारी प्रणाली की संभावनाओं को और बढ़ाएगा।

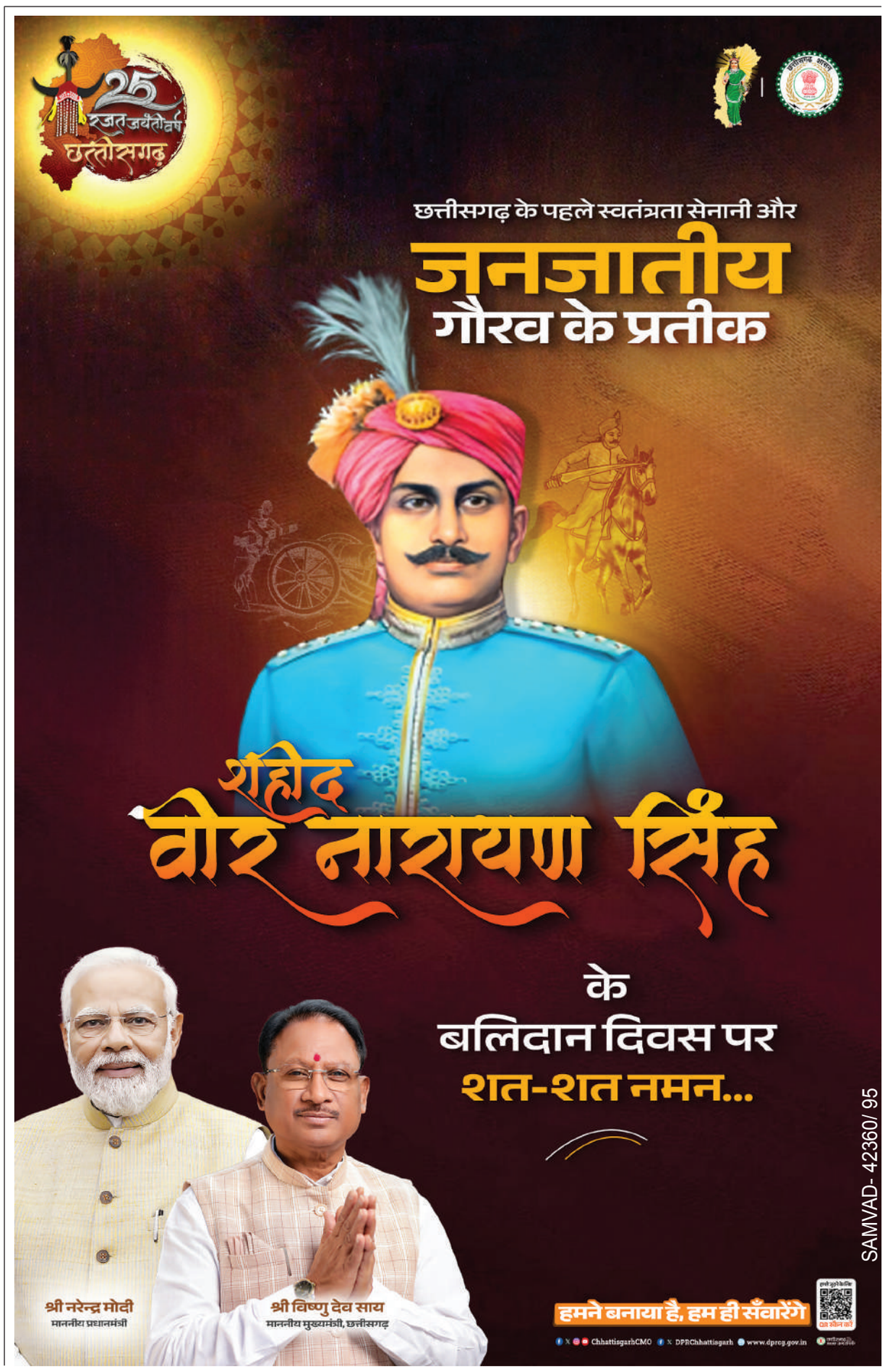

आरबीसी 6-4 के तहत मृतक के परिजनों को मिली 4-4 लाख रुपए की सहायता

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर डॉ गौरव कुमार सिंह के निर्देश पर आरबीसी 6-4 के तहत सहायता राशि प्रदान की गई है। आरंग के ग्राम ओड़का निवासी संतोषी घृतलहरे, ग्राम जरौद निवासी खुमान साहु और अभनपुर के सिंगारभाटा ग्राम निवासी राजकुमार कोसले की तालाब में डूबने से दर्दनाक मौत हो गई। जिसके लिए कलेक्टर डॉ सिंह ने उनके परिजनों को आरबीसी 6-4 के तहत 4-4 लाख रूपये की सहायता राशि प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की है।

रायपुर जिले में सोमवार को 16 हजार 176 टन धान की हुई खरीदी

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश में जिले के किसानों को समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी की जा रही है। जिले में आज 16 हजार 176 टन धान की खरीदी की गई। जिले में आज 4 हजार 247 किसानों से 37 करोड़ 21 लाख रूपये धान की खरीदी हुई। इस प्रकार अब तक 139 उपार्जन केन्द्रों में 51 हजार 556 किसानों से 01 लाख 68 हजार 347 टन धान की खरीदी हुई है। इन किसानों से अब तक 501 करोड़ 10 लाख रूपये की धान की खरीदी की गई है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर धान केन्द्रों में किसानों को आवश्यक सुविधाएं भी प्रदान की जा रही है। जिससे किसानों में धान बेचने को लेकर उत्साह है।